सहजानंद शास्त्रमाला

# सुबोध-पत्रावली

## भाग 2

**रचयिता**

अध्यात्मयोगी, न्यायतीर्थ, सिद्धान्तन्यायसाहित्यशास्त्री

पूज्य श्री क्षु० मनोहरजी वर्णी "सहजानन्द" महाराज

**प्रकाशक**

**श्री सहजानंद शास्त्रमाला, मेरठ**

**एवं**

**श्री माणकचंद हीरालाल दिगम्बर जैन पारमार्थिक न्यास**

**गांधीनगर, इन्दौर**

**Online Version : 001**

http://sahjanandvarnishastra.org/

सर्वाधिका सुरक्षित

श्री सहजानन्द शास्त्रमाला

# सुबोध-पत्रावली

( १६ )

( पूज्य श्री १०५ क्षु० गणेशप्रसाद जी वर्णी महाराज
व पूज्य श्री १०५ क्षु० मनोहर जी वर्णी 'सहजानन्द'
महाराज की ओर से लिखे गये पत्रों
का संग्रह )

संग्रह कर्ता:—

मूल चन्द जैन
जैन स्ट्रीट, मुजफ्फरनगर

(प्रथ)म संस्करण
प्रति
२२००

वीर० नि० सं० २४८०

मूल्य
१० आना

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org

# भाग २

श्रीमान् ब्र० बाबाजी जीवानन्द जी सादर इच्छाकार।

परंच—आपका पत्र आया। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगया यह जानकर प्रसन्नता हुई।

दुनियाके अणु अणुसे सर्वआत्माओंसे भिन्न अपनेआपको चैतन्यमय अनुभव करके निराकुल रहिये। आप स्वयं सत् हैं, अविनाशी हैं, चैतन्यस्वभावी आनन्दमय हैं किसी चिन्ता को स्थान ही नहीं। परपरणति से अपना सुधार बिगाड़ नहीं, अपने में रत-लीन होनेका प्रयत्न होना चाहिये। ब्र० विवेकानन्द जी ब्र० जयानन्द जी का इच्छाकार।

इन्दौर
२६-५—५३

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् ब्र० बाबा जी जीवानन्द जी योग्य इच्छाकार।

परंच—आपके पत्र आये, आपको अभी पूरा आराम नहीं हुआ। आप धैर्य रक्खें सर्व अच्छा होगा। आत्मा चैतन्यपुञ्ज है। अपने विषयमें पर्यायमात्र की बातही ध्यान में न लाना। मैं अनादि अनन्त अखंड चैतन्यपिण्ड वस्तु हूँ जगत के किसी द्रव्य से मेरा सम्बन्ध नहीं ध्यान, भावना रहना चाहिये। भावना भवनाशिनी। यह अभ्यास बढ़ाना चाहिये कि कोई कुछ कहे अपने को चैतन्यमात्र अनुभव करके यही सोचना चाहिये कि मुझे किसी ने कुछ नहीं कहा। कह ही नहीं सकता। देवकीनन्दन बृजनन्दन को दर्शनविशुद्धि।

इन्दौर
१०—६—५३

आ० शु० चिं०
मनोहर

Version 1

卐 卐 卐

http://sahjanandvarnishastra.org/



श्रीमान् धर्मवत्सल सर सेठ हुकमचन्द जी धर्मस्नेह इच्छाकार—

पंरच—आपका तार मिला— आपका उभयस्वास्थ्य उत्तम होगा— चातुर्मास के विषय में मैं ज्येष्ठमास तक कहीं के लिये नहीं कहता ऐसा मेरा संकल्प है। परन्तु आपके धर्मस्नेह के कारण इन्दौर का ध्यान है। पूर्ण विचार होगया तब आषाढ़ मास में समाचार दूंगा।

आपका परिणमन ज्ञानोपयोग में प्राय: होता ही रहता है। यह ही एक आत्मा के लाभ का व्यापार है। अपनेको मनुष्य, धनी, गरीब, त्यागी, श्रावक, शास्त्रज्ञानी, मूर्ख, किसी जातिवाला, शरीर, रूप, यशसहित, यशरहित आदि किसी रूप न मानकर ज्ञातारूप अनुभव करते हुए अन्तर में आराम पाना शाश्वत आनन्द लाभका अति निकट मार्ग है। मंडली एवं परिवार धर्मस्नेह कहिये।

शिमला
२२—५—५२

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् सर सेठ साहब योग्य धर्मस्नेह—

परंच—हम खंडवा सकुशल आगये— आपका धर्म ध्यान निज अखंड ज्ञान सामान्य की दृष्टि से पुरस्कृत होता हुआ होही रहा होगा – श्रीयुत भैया राजकुमार सिंह जी आदि परिजनोंको दर्शन विशुद्धि –श्री मां साहब को धर्मस्नेह कहियेगा— श्री ब्र० जीवानन्द जी व जयानन्द जी हस्तिनापुर यात्रा को गये हैं। जगतके व्यवहारों का उपयोग-दृष्टि-आत्मा के लिये विसंवाद है — व्यवहार में रहकर भी निज सहजरूप दृष्टि रहे यह सम्यग्ज्ञान से ही होगा। सर्व तथ्य हैं परन्तु वाह्य द्रव्यमें ममेदं कल्पना नितान्त अतथ्य है। मेरे ध्यान से अध्यात्म हितमार्ग के अन्वेषण की दृष्टिमें नयके ४ प्रकार हैं— (१) शुद्ध निश्चयनय, (२) अशुद्ध निश्चयनय, (३) व्यवहारनय (४) उपचार— इनमें उपचार तो बिल्कुल अतथ्य है। शेष तीनों तथ्य हैं जिन्हें हम इन विषयों में विभक्त कर सकते हैं— (१) द्रव्य

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



का सहजस्वरूप अखंड सामान्यरूप है— (२) विभाव में निमित्त कुछ करता नहीं, (३) विभाव निमित्त बिना होता नहीं। इसमें पहला विषय तो शुद्ध निश्चयनय का है, दूसरा विषय अशुद्ध निश्चयनयका हैं, तीसरा व्यवहारनय का विषय है—चौथी बात जैसे मकान शरीर मेरे हैं यह विलक्षण अतथ्य है। आपकी सम्यग्दृष्टि प्रशंसनीय है हितप्रद है। कोई विशेष पत्र गुरुवर्य वर्णीजी साहब का आवे तो मुझे भी उन शिक्षा के परिणामों से सूचित करते रहियेगा— अपने स्वास्थ्य के विषय में लिखिये — ठीक होगा—

खंडवा

आ० शु० चि०
मनोहर

卐 卐 卐

( ओपरेशन के समय )

श्रीमान् सर सेठ साहब हुकमचन्द जी जैन योग्य धर्मस्नेह—

परंच—आपके स्वास्थ्यवृत्त पूछने बाबत आपको इन्दौर के पते से पत्र दिया था जिसके उत्तर में श्री रमणलाल जी प्राइवेट सेक्रेटरी ने समाचार भेजे हैं आपका स्वास्थ्य अच्छा ज्ञात हुआ। अब आप पूर्ण स्वस्थ होगये होंगे - संसारके स्वरूपका और आत्माके स्वरूप का आपको दृढ़तम ज्ञान है ही—आशा है आप प्रत्येक परिस्थितियों में शुद्ध चैतन्यस्वरूप के बार २ अवलोकन से प्रसन्न रहते रहे होंगे। कर्मोदय प्रायः दुर्निवार है फिर भी ज्ञानी कर्मोदयोपयोग में एकत्व भाव न होनेसे अंतरङ्गमें अनाकुल ही रहते हैं। आप अपनी प्रसन्नता का पत्र देना— सर्वपरिवार को दर्शन विशुद्धि—

जयपुर
१०-१०-५३

आपका हितचिंतक,
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत बाबा जी जीवानन्द जी सादर इच्छाकार—

परंच— आपका पत्र आया वृत्त अवगत किये। आपका पैर

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



अच्छा होगया सो सबको हर्ष है। अब आप जितनी जल्दी होसके मार्चके बाद जल्दी आना। यह बात तो कुछ अंशों में ठीक ही है कि आपको समागम बिना धर्मध्यान का लाभ नहीं हुआ। परन्तु वेदना में भी कहांतक धर्मध्यान हो सकता है यह बात भी आप जानते हैं। वेदना तो सम्यक्त्वमें निमित्त हो जाती है। उपसर्ग तो शुक्लध्यान को भी समीप ला देता है। जगत की अशरणताका भाव भरनेका अवसर था। क्रमवद्धपर्याय जब जो हुई होनी थी निकल गई। आत्मीयआनन्दसे प्रमुदित रहिये। ब्रजनन्दन को दर्शनविशुद्धि।

देहरादून
२४-३-५३

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत बाबा जी जीवानन्द जी सादर इच्छाकार—

परंच—आपका पत्र आया वृत्त जाने— आप १ अप्रैल को अरहन्तनगर जारहे हैं सो अच्छा है। अब हमारा विचार श्री बड़े वर्णी जी के पास कुछ दिन बाद जाने को हो रहा है देहरादून से जाने का विचार है करीब ८-१० दिनमें। तबतक आपभी कुछ स्वस्थ हो जावेंगे। ला० गेंदनलालको दर्शनविशुद्धि कहना—बृजनंदन को भी दर्शनविशुद्धि कहना ब्रजनन्दन की सेवा प्रशंसनीय है।

जगत को अनित्य असार अहित समझकर इससे लक्ष्य हटाकर इन्द्रियों को भी संयमित करके अपने आपके अनुभव अमृत द्वारा अमर बनें। पत्र देना। और यह लिखना कि आप लाठी के सहारे कितना चलने लगे हैं। शेष सर्वकुशल—बा० ऋषभदास जी सानन्द होंगे। उनकी उदारता सन्मान के योग्य है।

देहरादून

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



श्रीयुत भाई प्रेमचन्द जी योग्यदर्शन विशुद्धि—

आपका धर्मसाधन ठीक हो, शांति लाभ हो। आप यदि २ वर्ष को ब्रह्मचर्य सपत्नीक रखसकें तो आपका व स्त्रीका व नवजात शिशु का तीनों का कल्याण है। इससे आपका बालक बहुत पुष्ट और सुन्दर विचारवाला बनेगा। बालक बालिकाओं को आशीर्वाद।

धन ऐश्वर्य सब पुण्यका फल है। पुण्य उसी पुरुष के बलशाली होता जो धर्मरूप प्रवृत्ति करते हुये भक्ति, दान, संयम आदि शुभ प्रवृत्ति रखते हैं।

चातुर्मास कहां होगा यह निश्चय नहीं। इन्दौर से पंचायतका व सेठ हुकमचन्द जी का भी विशेष आग्रह हो रहा है।

शिमला

आ० शु० चिं०
मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्री भाई धर्मवत्सल ला० ताराचन्द जी महानुभाव
योग्यदर्शन विशुद्धि

परंच—आपका स्वास्थ उत्तम होगा। तदनंतर मेरास्वास्थ अब ठीक है—परिवारजनों को दर्शन विशुद्धि। धर्म आत्माकी मोह क्षोभरहित परिणतिको कहते हैं। वाह्य प्रवृत्तियां व्यवहार धर्महै। क्रोध, मान, माया, लोभ पर विजय प्राप्त करना ही शान्तिमार्ग है। आजकल आडम्बर विशेष है। सत्य स्वरूपकी ओर झुकाव नहीं के बराबर अर्थात् कमहै। अतः एक अपने नैर्मल्यभावरूप धर्मसे प्रयोजन होना यह धुन हो जाना सत्पथ है। वह आप ही में है केवल दृष्टि देना है। आपके सद्व्यवहार का मुझपर स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव पड़ा।

कांधला
२४—५—५१

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



श्रीमान् धर्मबन्धु ला० ताराचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि

परंच—आप सकुशल धर्म साधन करते होंगे। यहां देहली कल आगया था। श्री १०८ आचार्य सूर्यसागर जी विद्वान और शांत है। हम सब यहां ५ क्षुल्लक है ब्रह्मचारी भी ५—६ हैं। अभी कुछ दिन यहां रहेंगे। यहां एक भाई पूछते हैं कि डोलावाले महाराज कहांपर है। मुझे पता नहीं आपको पता होतो लिखना। संसार एक विकट परिस्थान है। आत्मा ज्ञानमात्र है, उतना रहे, संसार चर्चाकी परवाह न करे तो आत्मा अपने सत्य लक्ष्यपर पहुँच सकता है। समाजके लोग मुनियोंकी भी चर्चा करनेसे दूर नहीं होते। मुझे उन महाशयके इस प्रश्नसे कि डोलावाले महाराज कहां हैं सुनकर दुःख हुआ। जिनको पूछना है उनका सीधा नाम लेकर पूछलेतो क्या उनका बिगड़जाता समझमें नहीं आता। आपके धर्मप्रेमको धन्य है। परिवारजनोंको दर्शनविशुद्धि कहना। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। आप चिन्ता न कीजिये।

देहली आ० शु० चिं०

मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान भाई ला० ताराचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धिः—

परंच—आपका पत्र आया समाचार जाने। हम लोग सकुशल इन्दौर आगये। आपके लिये अध्यात्मपंचसंग्रह भेजा है मिला होगा।

अपना समय कुछ आजीविका व्यापारमें बिताकर शेष अधिक से अधिक समय स्वाध्यायमें लगाना। जिनवाणी सच्चे उपदेश द्वारा मोह निवृत्तिमें साधन होगी।

परिवारको दर्शन विशुद्धि—निरन्तर अपने सत्य स्वरूपके लक्ष्य पर प्रयत्न रखना। निज आत्मा अखंड गुणपूर्ण अजरअमर, और

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



अकिञ्चन है। उसी के ध्यानसे भव्यजीव मुक्तिका मार्ग पाते हैं।

२३—६ - ५२ आ० शु० चिं०

मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई ला० ताराचन्द जी जैन योग्य दर्शनविशुद्धिः—

आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। आपकी पद्धतिका मुझे बारबार ध्यान आता है। आपकी परिणति और त्यागियोंके प्रति परिणाम श्लाघ्य है।

भाई जी—आप सामायिकका अभ्यास जरूर रखिये। सामायिक—१ जाप, बारह भावना का विचार अपने से बातचीतके रूपमें कुछ उत्साह पैदा करना, व कुछ समय सब प्रकारका विचार छोड़कर शान्त बैठना यही सामायिकके प्रोग्राम है।

शारीरिक स्वास्थ्य इस समय ठीकनहीं है। कुछ थोड़ासा बुखार है तथा नज़ला जुखामका बहुत जोर है जिससे गलेमें तथा पीठ हाथमें दर्द है, सिर भारी सा है। यद्यपि स्वास्थ्य खराब है जो भी व्यग्रता बिल्कुल नहीं। आप चिन्ता न करें। जल्दी ठीक होजावेगा आप सानन्द स्वाध्याय करियेगा- अभी हमारा विचार कांधला ठहरने का है। दो हफ्तेका प्रोग्राम कांधले का है। बीचमें २—३ दिनको बूचाखेड़ी में मन्दिर बनने की स्कीमके लिए जो कैरानेके पास है शायद जाना पड़े। खेड़ीके भाई आये थे। उन्होंने इस मंदिर बनवाने की प्रेरणा की थी। वहां २० घर जैनों के हैं पर मन्दिर नहीं है।

पूज्य श्री १०८ आचार्य सूर्यसागर जी महाराज मेरठ किस दिन आवेंगे और अभी कहां हैं जरूर समाचार भेजियेगा। पत्र भेजने का पता यह है:—

मनोहर वर्णी डि० दि० जैन मंदिर कांधला।
(जि० मुजफ्फरनगर) खास कांधला।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



सब भाइयोंसे दर्शनविशुद्धि कह दीजियेगा।

आपका हितचिन्तक
मनोहर

श्रीमान् भाई बा० ताराचन्द जी एम० ए० योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आज आपका पत्र मिला — श्री आचार्य जी के स्वास्थ्य का समाचार जानकर बहुत खेद हुआ। श्री आचार्य नमिसागर जी का स्वास्थ्य यदि कुछ अधिक खराब हो तारद्वारा खबर देवें। श्री बड़े वर्णी जी का श्री आचार्य जी को प्रणाम कहना। उन्हें भी इस समाचारको सुनकर बहुत खेद हुआ और यही भावना है कि महाराज का स्वास्थ्य शीघ्र अच्छा हो।

श्री आचार्य महाराज जी को मेरा नमोऽस्तु कहना। मुझे उनके दर्शनों की बहुत अभिलाषा थी पर अभी पूर्ण नहीं हो रहीं। आशा है उनके दर्शन हो जावेंगे। सर्व धर्मबन्धुओंको दर्शनविशुद्धि। लाला जुगमन्दरदास जी आदि सब सकुशल होंगे। मेरी हार्दिक भावना है जो श्री आचार्य महाराज जी को शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो।

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्री भाई रतनलाल जी योग्य दर्शविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया। एक जाप्य आप प्रतिदिन करते ही होंगे, यदि नहीं तो अवश्य करना। समय अधिक न हो तो पहले ६ बार णमोकार मंत्र पढ़करके ॐ नमः सिद्धेभ्यः को १०८ बार जप लेना—पश्चात् छहढाला की कोई ढाल या अन्य पाठ या १ भजन पढ़कर ६ बार णमोकार मंत्र पढ़कर समाप्तकर लेना। यह बात नरेश भाई आदि को भी कह देना।

शिमला
६—६—५२

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



श्री भैया रतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया।

आयुबंध से मतलब नरकायुबंध तिर्यगायुबंध आदि से है उम्रसे नहीं और गतिबंधसे मतलब नरक गतिबंध आदि से है। आयुबंध टूट नहीं सकता। देवायुबंध तब देव ही होगा। गतिबंध का परिवर्त्तन हो जाता। आयु का काम तो उस भवमें आत्मा को रोके रहना है, गति का काम उस भवके अनुकूल भाव होना है। गतिका उदय आयुका मुख ताकता है।

भैया, जैसे प्रशंसाका आनन्द मिलता है तैसा निन्दा का भी मिलना चाहिये तभी धैर्य और स्वभावनिश्चलताकी मजबूती होगी। आत्माका लक्ष्य और परिणाम श्रेष्ठ होना चाहिये।

परिवार को दर्शनविशुद्धि।

इन्दौर
१८—८—५२

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० रतनलालजी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका स्वास्थ्य अध्ययन धर्मसाधन ठीक होगा।

भैया आत्मा का तीन कालका स्वभाव क्या है? केवल प्रतिभासरूप ज्ञाता दृष्टाकी स्थिति, वह लक्ष्यमें रहे और यहांका वास व समागम क्षणिक है ऐसा ज्ञानमें रहे तो आत्माकी अपूर्व उन्नति होगी।

अपने स्वास्थ्य का समाचार देना व ध्यान रखना आजकल बरसात का मौसम है पथ्य सुपथ्य भोजन पर ध्यान रखना—संसार संसार ही है, अन्य है, कभी भी कोई प्रकार की आकुलता न लाना। हमारी भावना है कि आपको वह ज्ञानपद प्राप्त हो जिसमें आपद रहती ही नहीं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



इन्दौर
२३—८—५२

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीभाई रतनलाल जी—योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आपका धर्मध्यान ठीक चल रहा होगा। परिवारजनों को दर्शनविशुद्धि—भाई नरेशचन्द जी को दर्शनविशुद्धि। दोनों भाई प्रीतिपूर्वक रहो और इस असार अनित्य संसार में आत्मज्ञानी बनकर अपनी सहज परिणतिके अधिकारी बनो जिससे सदाको सच्चा सुख पालो यही मेरी तुम दोनोंके लिये व सबके लिये भावना है।

देहरादून
२८-४-५२

आ० शु० चिं०
मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई रतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

लोकमें बस जीवन निभाना है इतना ही काम है। परन्तु अपने लिये ऐसे ज्ञानमें प्रवेश और स्थिरता पाना- जिससे सर्व क्लेशोंका मूल यह परपदार्थ शरीर सदा के लिये वियुक्त हो जाता है। यह कार्य सामने है, मुख्य है।

खंडवा
१५—११—५२

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भैया रतनजी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया— सब भाइयों को दर्शनविशुद्धि छात्रवृन्द को आशीर्वाद।

कार्तिक के बाद आप अपने अध्ययन पर बहुत विशेष ध्यान रखना। अपने शुभोपयोग व शुद्धोपयोग से प्रयोजन रखना तथा निर्बाध व्यवहार रखना। अपनेमें कभी कमी उत्पन्न हो तो

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



अपने को ही दबा लेना और क्षणान्तर में आत्मस्वरूप सोचकर उसे निकाल देना।

इन्दौर — आ० शु० चिं०
११—१०—५२ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भैया रतन — योग्य धर्मवृद्धि—

परंच—आपका पत्र आया। मनुष्य जीवन में बाल्यावस्था में ही सज्ज्ञानपूर्वक धर्मसंस्कार दृढ़ होना सुभवितव्य का सूचक है। कुछ भी विवेकशालियों को जो बुद्धि वृद्धअवस्थामें होती है उस बुद्धिका बहुत पहिले ही होजाना सच्ची सावधानी है। आत्मा तो एकाकी ही है। अपने को एकाकी समझना "गेही पै गृह में न रचे ज्यों जलमें भिन्न कमल हैं की चरितार्थता का मूल है— ऐसा प्रयत्न होना चाहिये जो क्रोध" अपमान के प्रसंग आने पर भी क्षोभ न आवे। यदि कुछ मनमें क्षोभ आ भी जावे तो बचनों से प्रदर्शित नहीं करे क्योंकि भीतरी बात तो २ मिनट बाद ही अपनेको समझाकर अलग की जा सकती है। प्रदर्शन से क्षोभ का तांता बढ़ जाता है। आप सुबोध पुरुष हैं।

इन्दौर — आ० शु० चिं०
७—१०—५२ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० रतनलाल जी जैन— योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया— जिणवरवसहेण में वृषभ शब्द का श्रेष्ठ अर्थ हो जाता है। चेदणकम्माणदा— कर्म २ तरह के हैं चेतनकर्म, अचेतनकर्म। ज्ञानावरणादि ८ कर्मों को जो प्रकृतिभेद के १४८ हैं तथा अनेक हैं वे अचेतनकर्म हैं। तथा कर्मों के उदयसे जो आत्मामें विभाव पैदा होते हैं वे चेतनकर्म कहलाते हैं-निश्चयनय से चेतनकर्म का कर्त्ता आत्मा है और व्यवहारनय से उन चेतनकर्म

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



के निमत्तके जो पुद्गलकर्म बंधते हैं उन अचेतनकर्म (ज्ञानावरणादि) का कर्त्ता है।

अनात्मभूत लक्षण— दंडीका लक्षण दंड—यहां दंडका अर्थ लाठी, बैंत।

सांव्यवहारिकप्रत्यक्ष—जिसे हम व्यवहारमें कहाकरते हमने प्रत्यक्ष देखा अप्रत्यक्ष सुनाआदि। यह सब व्यवहारमें कहाजाने वाला प्रत्यक्ष सांब्यवहारिक प्रत्यक्ष है वास्तवमें तो यहसब मतिज्ञान है और मतिश्रुत परोक्ष कहेगये हैं।

धर्मशिक्षासदन के अत्मविद्यार्थियोंको आशीर्वाद।

खंडवा — आ० शु० चि०

नवम्बर सन् ५२ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० रतनलालजी योग्य दर्शनविशुद्धि—

मुझे इस बातका दुःख है कि तुम्हारे लिखनेपर भी मैं धर्म शिक्षासदन के अधिवेशनसंदेश न भेज सका।

१—किसीके सम्बन्धमें किसीको कुछ समाचार आदि कहनेमें उसके हितका ध्यान रखना—मनुष्य जीवनमें ऊंचे उठनेका यह भी एक मंत्र है।

२—जिस बातके कहनेमें स्वपरकी भलाई न हो अहित हो वह बात नहीं कहनेसे आत्मबल प्रकट होता है।

३—किसी भी परिस्थितिमें हो मधुर वचन हितकारी बोलना ही मानवधर्म है।

४—मनसे सबका भला सोचना बचनसे हितमित प्रियबचन बोलना, कायसे जहां तक बलरहे दूसरेकी सेवा करना शुभोपयोग है वह दोनों भवकी उन्नतिका कारण है।

तुम भव्य पुरुष हो। जहां तक हो जो बात उत्तम जंचे हृदयमें धारण करो।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



आप इसवर्ष कार्तिकके बाद अपने कालेजके अध्ययनमें काफी मन और समय लगावें, धर्मशिक्षासदनको ४५ मिनट ही समय काफी है जाड़ोंमें तथा जैसा लाला जी कहें सो ध्यान देना।

आ० शु० चिं०

इन्दौर मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत ला० सुखवीरसिंह जी हेमचन्द जी जैन योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आप सब सकुशल धर्मसाधन करते होंगे। शास्त्रस्वाध्याय पर विशेष ध्यान रखना। श्री पं० शरणाराम जी हस्तिनापुर गये थे वे हस्तिनापुर ही हैं या बड़ौत? हमारा बड़ौत आने का इरादा तो था किन्तु आपको तो मालूम ही होगा बागपतसे हस्तिनापुर चला गया था। यथार्थ शान्तिका कारण यथार्थ ज्ञान है। वस्तुके स्वरूप व कारण में विपर्यपना न रहे तो ज्ञान की समीचीनता है। सर्ववस्तु स्वतंत्र सत् हैं। किसीका किसीसे सम्बन्ध नहीं। निमित्त नैमित्तक भाव ऊपरी सम्बन्ध है इसकी स्वरूपमें प्रतिष्ठा नहीं। अपनी आत्माको स्वतन्त्र एकाकी अपने परिणमन् स्वभाव से परिणमन ने वाला अन्य सर्व अनंतानंत द्रव्योंसे न्यारा समझकर परपरिणमनमें हर्ष विषाद् न करना अपनी अपनी रक्षा है। सर्व भाईयों को दर्शनविशुद्धि।

मल्हारगंज, इन्दौर आ० शु०: चिं०
२८ मई सन् ५३ मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई लाला सुखबीरसिंह हेमचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र गयामें प्राप्त हुआ था तथा जैन समाजकी ओरसे चातुर्मासका निमन्त्रण भी। वर्षायोगका निर्णय १५-१६ दिनमें कर लूंगा। सब भाइयों को दर्शनविशुद्धि। आत्ममनन शांति

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



का स्रोत है। वाह्य अर्थ तो कितना भी समागमहो शान्तिका कारण नहीं प्रत्युत अशांति का आश्रय है। सामायिक स्वाध्याय नियमित करते रहें।

मल्हारगंज, इन्दौर                                                    आ० शु० चिं०
२४–६–५३                                                              मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई सुखबीरसिंह जी हेमचन्द जी जैन योग्य दर्शनविशुद्धि

परंच—आप सकुशल धर्मसाधना करते ही होंगे—तदनंतर आपका पत्र आया चातुर्मास के लिये २—१ जगह को विचार लिख दिया है यदि कदाचित् वहांका विचार हमलोगोंका न हुआ तब यहां के वर्षायोग की सूचना दूंगा। इस समय तक १० नगरोंसे जैन समाजके पत्र तार आये हैं उनमेंसे बड़ौतको भी विचाराधीन रखा ही है। आप निर्णयसे पहिले आनेका कष्ट न करें। सर्वमंडलीको दर्शनविशुद्धि। आत्मोत्कर्षका उपाय एकमात्र सम्यग्ज्ञान है उसके संपादनके अर्थ स्वाध्याय करते ही रहें। मनुष्य जीवन अमूल्य जीवन है। इसका समय आत्मोत्कर्षमें लगायें। कुछ नये स्थानोंसे अधिक आग्रह होरहा है यदि वहां का मेल विचार न हुआ तो आपको जरूर लिखूंगा। आप निर्णय पहुँचनेसे पहिले आनेका कष्ट न करें।

मल्हारगंज इन्दौर                                                    आ० शु० चिं०
२६–६ ५३                                                              मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई सुखबीरसिंह जी हेमचन्द जी जैन सर्राफ योग्य दर्शन-विशुद्धि।

परंच—आपका स्वास्थ्य व धर्मसाधना ठीक होगा। स्वाध्याय में सामायिक में सुबहका समय देना जल्दी उठना सुबह अच्छा है। चातुर्मास्य (वर्षायोग) तो अब जयपुरही होरहा है। जयपुर स्थान

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



अच्छा है। मन्दिर बड़े बड़े करीब १०० हैं। चैत्यालय अलग है।

रत्नकरण्डश्रावकाचार पं० सदासुखदास जी की वचनिका सहित का स्वाध्याय करना।

सर्वपदार्थ स्वतन्त्र हैं किसीका किसीके साथ सम्बन्ध नहीं है। क्योंकि सम्बन्ध हो या कोई किसीके परिणतिसे परिणम जायेतो फिर वस्तु टिक नहीं सकती किन्तु वस्तुलोक अनादिसे टिकरहा है चलरहा है ऐसी वस्तु व्यवस्था जानकर अपने आपमें अपने आपके सर्वस्वको देखकर प्रसन्न रहो। करना कुछ पड़े अपने स्वभावको न भूलो। मोह राग द्वेषमें हित नहीं। सर्वआत्मा प्रत्येक से पृथक् हैं। भेद विज्ञानकी भावनासे दुःख संसार अवश्य दूर होगा। परिवारको दर्शनविशुद्धि सर्वमंडली को दर्शनविशुद्धि।

जयपुर
४–८–५२

आ० शु० चिं०
मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत महाशय ला० सुखबीरसिंह जी हेमचन्द जी योग्यदर्शनविशुद्धि

परंच—आपका पत्र आया आपने जनेऊकी विधि पूछी सो त्याग करना निम्न प्रकारसे व नियम रखना तो कल्याणार्थीका कर्तव्य है। सप्तव्यसनका त्याग रात्रिभोजनका त्याग, जल छानकर या छनाकर पीना शक्यनुसार सामायिक देववंदन स्वाध्यायमें समय लगाना मुख्य कर्त्तव्य है।

आपका लिखाहुआ ट्रैक्ट ठीक है। दिवाली बाद ही उसे छपानेका लोगोंका निश्चय हैं। दिवाली बाद प्रायः आपके प्रान्तमें आऊंगा। ट्रैक्टकी भाषा बहुत अच्छी है।

धर्मसाधन कार्यमें प्रमाद न करना स्वाध्याय में जो चर्चा न समझमें आवे पत्रद्वारा पूछते रहना।

अपने आपको जानना व उसीमें स्थिर रहनेका प्रयत्न करना ही है सार शेष सब असार है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



अब यहां वर्षाहुई है ठंडा होगया है। अवसर हो तो आसकते हैं अब गर्मीकी बाधा नहीं।

१—अरहंत देव शरीरसहित लोकमें विराजमान होते हैं। उनके द्रव्य इन्द्रिया पांच हैं। उनको उपयोग नहीं यानि भावेन्द्रिय—त्तायोपशमिक ज्ञान नहीं। नियमसे वे सिद्धहोंगे सिद्धलोकमें विराजमान होंगे।

२—विकलत्रय दोइन्द्रिय तीनइन्द्रिय, चतुरिंन्द्रय इसतरह हैं उनके मन नहीं होता।

३—मुक्तजीव सिद्ध लोकमें लोकके अग्रभागमें मनुष्यलोक के ऊपर ४५ लाख योजनमें हैं, शरीर रहित हैं इन्द्रियरहित हैं।

४—आत्मा मुक्त होकर फिर संसारी नहीं होता परन्तु परमाणु अकेला रहकर भी फिर स्कंधरूप में आ जाता।

५—गोभी में त्रसघात है। फूलगोभी तो खराब है ही—बंदका आप निर्णय कर लेवें। वह भी ठीक नहीं जंचती। मूली के पत्ते जमींकन्द नहीं हैं वह अनन्तकाय भी नहीं है।

जयपुर
२४—८—४३

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई सुखबीरसिंह जी हेमचन्द जी योग्य धर्मवृद्धि—

परंच—आपका पत्र आया— चातुर्मास्य पश्चात् बड़ौत आने को लिखा सो ठीक है— बड़ौत आनेका अवश्य विचार है इस विषय में असौज बाद लिखूंगा— जिस तिथि का प्रोग्राम बैठेगा।

१—जिस ग्रन्थ में दूध व्रत दही त्याग आदि का वर्णन है उसका मतलब यह है कि जिसके दूध पीने का व्रत है वह दही नहीं खाता और जिसके दही खाने का ही नियम है वह दूध नहीं पीता और जिसके अगोरस का नियम है अर्थात् कोई गोरस नही खाऊंगा ऐसा नियमवाला दूध दही कुछ भी नहीं लेता। यह द्रव्य

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



पर्याय के उदाहरण में लिखा है इस तरह द्रव्य में सब पर्याय आगई परन्तु पर्याय में अन्य पर्याय नहीं आती। इस पर उत्पाद व्यय ध्रौव्य घटाया जाता है।

२—जल एकेन्द्रिय जीव है। गृहस्थ स्थावरहिंसा का त्यागी नहीं हो जाता उसके सचित्तभक्षण का त्याग भी होता है तब अपने: अर्थ अचित्त सामग्री करता है। जलभी प्रासुक करता है उस जल को साधु ले लेते हैं प्रासुक जलमें कोई जीव नहीं है। जल छाननेके बाद भी एकेन्द्रिय जीव रह जाते हैं यह बहुमत है। प्रासुक जलमें एकेन्द्रिय जीव भी नहीं रहते।

३—अपनी जानमाल की रक्षाके लिये गृहस्थ प्रत्याक्रमण करता है उसमें जो हिंसा हो जाती है उसमें जो हिंसा हो जाती है उसे विरोधी हिंसा कहते हैं इसका गृहस्थ त्यागी नहीं हो पाता।

४—जहां अनन्तसिद्ध भगवान विराजमान हैं वहां सूक्ष्म निगोद भी रहते हैं, सिद्ध अपने अनन्त ज्ञानसुख में रत हैं। निगोद जीव अपने दुःख में पड़े हैं सिद्ध भगवान का आत्मा अमूर्त है देह रहित है। सूक्ष्म निगोदों से यह लोक ठसाठस भरा है।

५—सिद्ध भगवान के ८ मूलगुण—सम्यक्त्व— सच्चा परिणमन जिसमें सम्यग्दर्शन सम्यक्चारित्र व सुखगर्भित हैं। ज्ञान जानना केवल ज्ञान— दर्शन—केवल दर्शन।

वीर्यवान्—अनन्त शक्तिमान्। शेष ४ प्रतिजीवी गुण है फिर लिखूंगा। ग्रन्थों में भी देख लेवें।

जयपुर — आ० शु० चिं०

४—६—५३ — मनोहर

श्रीयुत भैया सुखबीरसिंह जी हेमचन्द जी योग्य धर्मवृद्धि।

परंच—आपका स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक हो रहा ही होगा। यह शरीर एक सप्ताह से मलेरिया का मित्र हो रहा था परन्तु आज मित्रता भंग हो गई। अपने अनादि अनन्त अहेतुक ज्ञान स्वभाव

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



का लक्ष्य रखना यही सर्वोन्नति का मूल है— आपका पत्र आया था—आने की तिथि के बारे में कार्तिक कृष्णपक्ष में लिख सकूंगा। परिवार को धर्मवृद्धि।

जयपुर
२६—६—५३

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् ला० सुखबीरसिंह जी हेमचन्द जी सा० योग्यधर्मवृद्धि—

परंच—आपका पत्र आया, हमारा प्रोग्राम ता० ८—११—५३ रविवार को यहां से चलने का हुआ है।

आपका मलेरिया अब शान्त होगया होगा। सर्वसमाज को धर्मवृद्धि कहना।

संसार में सब स्थितियां भाग्योदय से होती हैं किन्तु आत्मीय सुख प्राप्ति निज ज्ञान पुरुषार्थ से होती। मानवजीवन की सफलता ज्ञानमात्र अपने आपके पहिचान लेने में हैं।

जयपुर
२७—१०—५३

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई सुखबीरसिंह जी हेमचन्द जी जैन सर्राफ धर्मवृद्धि—

परंच आपका पत्र आया। आप अपने मनमें अणुमात्र भी भ्रम न रक्खें कि मैं नाराज हूं, हमारा प्रोग्राम इस समय गया जाने का था किंतु कोडरमावालोंने १ हफ्ता और सत्याग्रह करके ठहराया इससे गया नहीं जा सका था। अब बसन्तपञ्चमी को गया जाना निश्चित अभी है। आप सर्व सपरिवार सकुशल धर्मसाधन करते रहें। स्वाध्यायमें अपना विशेष समय लगाना। सुप्रसन्न रहना। संसारकी सन्ततिके छेद करनेका लक्ष्य न भूलना। आत्मा का सुख निजमें निजकी दृष्टिमें है। वाह्य परिकर पुण्यका विपाक है आत्मा में उसका अणुमात्र भी कुछ सम्बन्ध नहीं। निर्मल

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



वीतराग दृष्टि होने पर जो शेष राग होता है उसके निमित्त से अपूर्व पुण्य स्वयं बंधता है। फिर भी उसपर दृष्टि नहीं होती कि यह हितरूप है। आत्मस्वभाव को देखकर लक्ष्यकर अपना जीवन सानन्द बिताइये। विरोध झगड़ा का कोई प्रसङ्ग आवे तटस्थ रहना सीखिये। वही काम ठीक है जो आत्मा को शान्ति दें। हमें आपके प्रति हितभावना है। आप स्वप्न में भी यह मत विचारना कि कोई नाराजी है। पत्र तो वैसे ही न डाल सका, कुछ यह भी सोचाकि किस पते से इनको उत्तर के लिये लिखें सो दूसरी जगह पहुँचकर लिख देंगे फिर कुछ देर होगई तो फिर सोचा कि दूसरी जगह से डाल देंगे। किसी जगह चाहे ज्यादह रहना पड़ा किन्तु पहिले से ज्यादह प्रोग्राम कहींका न था। इस बीचमें १ पत्र देनेका मुझे ख्याल है कि दिया। शेष सर्व शुभ। आपके पत्र को देखकर मुझे दुःख हुआ कि मेरी जरा सी गफलत में आपको इतना विकल्पका कष्ट उठाना पड़ा। आप निश्चिन्त धर्म साधन करे। हमसब आनन्द हैं। पत्र गयाके पतेसे देना। ८ फरवरीको गया जाने का प्रोग्राम है। परिवार को दर्शनविशुद्धि। बच्चों को आशीर्वाद-

आ० शु० चिं०

६-२-५४ सहजानन्द

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई नेमिचन्द जी—योग दर्शनविशुद्ध।

परंच—आप सानंद धर्म साधन करते होंगे माता जी को विशेष रूपसे धर्म साधनाका प्रोग्राम रखना कोई शास्त्र सुना देवे।

माताजी को दर्शन विशुद्धि कहना और कहना—कि पर द्रव्यको अपना मानना ही दुःखकी जड़ है। सर्वसम्पन्न होचुके किसीसे ममता न करो। पंच परमेष्टी के चिन्तवनमें शास्त्र सुननेमें उपयोग लगावो १२ भावनावों का जुदा २ विचार करो। वेदना तो पूर्व कर्मके उदय से होती है। आत्मा का स्वभाव दुःख नहीं है सो यदि वेदना में

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



क्लेश नहीं करोगी तब वह वेदना तो कर्मकी निर्जरा करेगी। जो असाता कर्म तुम्हारे बंधा था वह खिर रहा है. अच्छा है उस कर्म से अभी निपट लो अभी समागम अच्छा है, तुम्हारे इस दुःखको कोई बांट नहीं सकता इसीसे शिक्षालो कि सब अपने कषायसे कर्म बांधते और उसका फल पाते हैं। जगतका सम्बन्ध तो मिथ्या है, है, कुछ किसीके पास रहनेका नहीं। केवल पाप पुण्य ही हाथ लगता।

आ० शु० चिं० एक मुमुक्षु
(श्री पूज्य १०५ क्षु० मनोहरलाल वर्णी)

卐 卐 卐

श्रीमान् धर्मवीर भाई जिनेश्वर दास जी सादर इच्छाकर।

भाई जी हम लोगोंके मनुष्य भव पानेकी सफलता तो इसही में है जो आत्मचर्या पर विशेष लक्ष्य हो। किसी आत्माका घनिष्ठ राग दुःख ही का कारण होता है। अवनतिका ही कारण होता है। सम्बन्ध छोड़नेके लिये हो। आप तो ज्ञानी हैं, मैं समझा नहीं रहा हूँ आपकी बात दोहरा रहा हूं। भेद विज्ञानकी भावना जितनी जितनी होती जाये वह तो है अपनी कमाई और शेष कार्योंसे किसी मुग्धकी कृपा मिले या करोड़ों की संपदा मिले व चाहे पर्यायबुद्धिकी मायामय दृष्टिमें प्रतिष्ठा मिले सारा धोखा है।

१–१–५२

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई जिनेश्वर दास जी योग्य इच्छाकार।

भाईजी संसार धोखा व इन्द्रजाल है। आत्मा तो अनादिअनंत है। आत्मा अनमोल रत्न है। इसमें कीचड़ ममता व रागका लगा है। कर्तव्य तो होता ही है फल जो हो—चिन्ता तो ज्ञानको होती ही है, कुछ समय की व्यग्रता भले ही हो। संसारमें कोई भी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



किसीका शरण नहीं। स्त्री पुत्र परिवार मित्र क्या है ? क्या कोई किसीको चाह सकता। खुदकी ही परिणति खुदमें होती है। अमुक मेरा चाहने वाला है यह मान्यता भ्रमपूर्ण है। मैं भी आपको चाह नहीं सकता क्योंकि मेरी चाह मेरेमें अभिन्न है। आपकी परिणति आपमें अभिन्न है वह मेरेको कैसे लग सकती। मैं भी रागी। आप भी रागी। अपनी अपनी चेष्टायें होती। धन तो प्रगट पर अचेतन है, इसकी ममता भ्रमपूर्ण है ही। अनादिसे इस जीव ने परकी संभालकी अपनी ओर दृष्टि नहीं की, इतनी मलिनता जीव पर है। यदि अपने पर दृष्टि फेरलो अपने स्वभाव की जाननेके बाद अपनी बेवकूफी पर रोते रोते कुछ क्षण व्यतीत हो सकता है। मेरा आपसे यह कहना है आप इतनी दृढ़ता रखिये समस्त पर वस्तु ये चाहे छिद जावो भिद जावो कहीं जावो कुछ होओ वह रंज भी मेरा परिग्रह नहीं, मैं ज्ञाता ही हूँ।

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई ला० जिनेश्वर प्रसाद सादर इच्छाकार।

विपत्ति हौवाको कहते हैं—यदि हौवा कोई वास्तविक चीज हो तो विपत्ति भी कोई चीज होगी सर्वद्रव्य स्व-स्व के तंत्र रहकर परिणमन करते चले जा रहे हैं। किसी वस्तुके विषयमें संयोग-वियोगकी कल्पनायें विपत्ति नामकी लाज रख रही है। आत्म स्वतन्त्रताका रहस्य पा जानेवाले आप लोगोंको कोईभी विपदा नहीं है। जगतमें नाना परिणत वस्तुओंका संयोग वियोग रहा–होनेदो–उसे कौन रोके—आत्मा तो योग उपयोग के अतिरिक्त क्या करे।

संसार मायामय है। आत्मस्वरूप पर लक्ष्य रखिये—दुःख कुछ फिर है नहीं अपना जगत में है क्या।

आपका अकिञ्चित्कर किन्तु हितचिन्तक मनोहर

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



श्रीयुत भाई जी सादर इच्छाकार।

परंच—आपका धर्मसाधन भले प्रकार हो ही रहा होगा—भैया ! अकुशलता है कहां ? आत्मदृष्टि नहीं तो सर्वत्र अकुशलता। एक दृष्टिमें द्वितीयका सम्पर्क ही नहीं, क्या आकुलता होगी। परन्तु हो आत्मदृष्टि। सन्मानका अभाव अखरना, दूसरे अच्छी दृष्टिसे न देखें तो वह भाव अखरना, लौकिक वैभवमें पड़ौसीसे अधिक न हो तो वह स्थिति अखरना, भिन्न पर आत्मावों से वृद्धिशील स्नेह होना आदि किस पिशाचिनी की करतूत है ? अनात्मदृष्टि की।

रामचन्द्र जी का भी वनमें जीवन गुजर गया, भरत भी अपमानके बाद भी तो किसी स्थितिमें रहे ही। चारुदत्तके क्या २ परिवर्तन हुये ? हम लोगों को क्या किसीने बड़े रहनेका अधिकार जमानेका, सबसे हाथ जुड़ानेका, विषय कषायोंको बढ़ाकरभी खुश ही बने रहनेका पट्टा लिख दिया है। एक कविने ठीक लिखा है 'गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्म माचरेत्'

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् धर्म बन्धु ला० जिनेश्वर प्रसाद जी—सादर इच्छाकर।

परंच—आपका पत्र मिला—समाचार ज्ञात किये। संसार का दुःख तब ही तक है जबतक आत्मा ने अपना सहज स्वभाव न पिछाना—एक अपने आत्माके अतिरिक्त कोईभी परमाणुमात्र अपना नहीं इस श्रद्धामें आकुलताको आश्रव का द्वार नहीं मिलता और आकुलता बाहर ही खड़ी रह कर तड़फकर मरजाती है, विजय सहजानंद की होती है। सुख और दुःखका बुला लेना हमारा मिन्टोंका और बांयें हाथका खेल है। किस ही परिस्थितिमें कोई दुःखरूप विकल्प किया कि दुःखका पहाड़ आगया और कितनी ही

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



परद्रव्यके परिणमनमात्र रूप कल्पितविपत्ति आई हो अपनेको स्वतन्त्र स्वद्रव्यक्षेत्रकाल भावमय सर्वतः प्रत्यक् चैतन्यस्वरूपको अवलोका कि सुधासमुद्रमें अवगाह कर अमर होगया। किसी परद्रव्य का मेरे चित्त के अनुकूल परिणाम नहीं होता तब परद्रव्य पर तो अपना वश ही क्या? अपने चित्तको मारा तो वाञ्छनीय परिणाम से भी कितना ऊंचा परिणाम होगया है। जो बात करने लिखनेमें आती है वह अवश्य है, कहीं हो, अपनी ही बात है, कोरा उपन्यास नहीं, अनेक आत्माओंने आत्मसिद्ध की वे जन्मते ही या पहिलेसे ही कुछ वा पास नहीं थे जो उनको ही ऐसा होना था और हमें ऐसा ही रहना है। अपना कर्त्तव्य है आत्मास्वरूप को लक्ष्य में रखना, अन्तिम शुद्धदशाका आदर्श रखना, समागममें पड़े हैं तब अपना कर्तव्य निभाना और जिस समागम में हो उसे तात्त्विक कल्याणकी बात सुनाकर संतुष्टकर उस व्यवहार के निमित्तसे अपना अन्तःपथ निष्कण्टक बनाना—आपस्वयं विज्ञ हैं मैं क्या लिखूं।

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान भाई ला० जिनेश्वर प्रसाद जी सस्नेह इच्छाकार।

परंच—आप धर्मसाधन सानंद हो रहा होगा—भेदविज्ञानका सभ्यास ही सुख शांतिका मूल है। किसी भी विषयमें कितना बढ़ जाने पर भी विवेक इसी सीमा पर विश्राम पाते हैं।

भैया! बात सत्य यही है जो सर्व की स्वतन्त्रता व एकाकिता किस प्रदार्थके साथ कुछ भी तात्विक सम्बन्ध नहीं। जो प्रीति आश्रय हैं वे ही अपने भ्रमसे अपने अहितमें निमित्त है, पर भ्रमकाल में ऐसा व्यर्थ बोध नहीं होता है और बन्धुओंमें ममता बनी रहती है। आपका साहस सराहनीय है जो 'गेही पर गृह में न रचे ज्यों जल तें भिन्न कमल है' इसको चरितार्थ कर रहे हैं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



यही बात अपने परिवार में भर दीजिये। अब आगे संतान न होना ब्रह्मचर्यपालन आपकी निवृत्ति का परम साधक होगा। वस्तुतः तो भाव ही साधक है परन्तु व्यवहार की उलझन न रहना भी निमित्त है। मतलब हमारा ब्रह्मचर्य से है।

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई मित्रसैन नाहरसिंह जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच आप सब सपरिवार सानन्द होंगे, धर्मसाधन पूर्ववत् ही हो रहा होगा। यहां ऐसा सुना गया जो अग्नि लगनेसे दुकानमें नुकसान होगया। यदि ऐसी बात है तब भी आप कुछ शोक न करें क्योंकि जीवके शुभ परिणामसे उपार्जित पुण्य का ही फल धनवैभव है अतः धनवैभव का कारण शुभ परिणाम ही है उसका घात नहीं होना चाहिये और साथ ही वीतराग संसारमाया से रहित सहज स्वरूप शुद्ध आत्मा का आदर्श ही हितकारी मानना चाहिये। आप तो ज्ञानमय हैं आपका कुछ नुकसान नहीं हुआ, रहा विभव संयोग सो पुण्यका उदय है तब शीघ्र ही पूर्ति हो जायेगी अथवा इन विकल्पोंसे भी क्या? अपना धर्माराधन करते हुए आत्मस्वरूप चिन्तवन करते हुए जगतकी मायाका दृश्य निरपेक्ष बुद्धिसे देखते हुए मानवजन्म सार्थक करें। यद्यपि आपको कुछ भी चिन्ता न होगी और इसीलिये मेरे इस लिखनेके आशय को विचार कुछ हँसेंगे भी लेकिन अच्छा है— मैं तो यही चाहता हूं जो आप निराकुल रहें। सीमंधर जी मूलचन्द जी आदि को दर्शनविशुद्धि।

४—१—५०

आपका हित चिन्तक
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भव्य दि० जैन समाज योग्य इच्छामि एवं दर्शनविशुद्धि—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



परंच—आप सबका अनेक हस्ताक्षरपूरित पत्र आया। यहां सेठ जी का व समाज का बहुत अनुरोध हो रहा है। मुझे तो यहांसे जाना कठिन मालूम होता है इसलिये अब मैं क्या लिखूं ? देहरादूनवालों को भी संकोचमय उत्तर देना पड़ा है। जैन समाज मेरठ का भी जवाबी तार पड़ा हुआ है।

भाई जी वस्तुतः प्रत्येक निमित्तों की उपस्थिति में भी सारा प्रयत्न मुमुक्षुका अन्तरंगमें ही होता है। आप सब अपने ही उपयोग के बलसे शाश्वत सुख का मार्ग पालेंगे। आपकी जो सेवा मुझसे होगी जब तक निर्विकल्प दशा न हो तब तक प्रयत्नशील हूंगा—रही संयोग की बात वह मेरे ही आधीन नहीं सो आप देख ही रहे हैं। इच्छा तो मेरे आधीन है पर उसकी पूर्त्ति भविष्यकी पर्यायके आधीन है—आप सब भाइयों का धर्मवात्सल्य बहुत ही सराहनीय है, आशा है जो आपका होता रहा प्रेम इस शरीर को मुजफ्फरनगर के क्षेत्र का स्पर्श करने में निमित्त होगा।

भाई जी! सुख शान्ति से आप लबालब पूर्ण हो स्वभाव को देखें। अनित्य और पराधीन बाह्य पर्यायों की आशा में यह भगवान ढका हुआ है। एक मोह गला कि सब विपदा दूर हुई क्योंकि विपदा सब स्वप्न ही हैं और इसी तरह संसारसुख जोकि विपदा ही है स्वप्न ही है— अबतो चेतो नया कदम उठावो आप आत्मा इतने ही नहीं जितने समय मनुष्य रहना है। अनादि निधन हैं। योग्य कार्य लिखना।

इन्दौर — आ० शु० चिं०

२५—६—५२ — मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई जुगमन्दरदास दास जी रमेशचन्द्र जी—

योग्य दर्शनविशुद्धि--

परंच—आपका पत्र आया—मेरा स्वास्थ्य अच्छा है, गातोड़

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



को भी पूरा आराम है। शास्त्रस्वाध्याय का ध्यान भोजन के समान ही होना बल्कि भोजन से भी अधिक होना होग्य है।

आपके स्वाध्यायाय की रुचि प्रशंसनीय है—परमात्मप्रकाश का आप स्वाध्याय कर रहे हैं उसमें टीका में लम्बे वाक्य हैं तथा हर बात तुरन्त ही मुकाबले के साथ बताई गई जैसे सिद्ध सुख कहा तो वहीं संसार दुःख बताकर संसार दुःख से विपरीत, तब दोनों मुकाबलों पर तुलना करते हुये पढ़ना चाहिये।

असैनी पञ्चेन्द्रिय अपर्याप्तमें जो गुणस्थान एक मतसे कहे उसका यह भाव है कि कोई सैनी पञ्चेन्द्रियके मरनेके समयमें सम्यक्त्व छूट जाय और दूसरा गुणस्थान प्रारम्भ ही हो और उसका मरण होकर वह जीव असैनी पञ्चेन्द्रियमें जन्मलेवे तो असैनी पञ्चेन्द्रिनके अपर्याप्त अवस्थामें कुछ समय तक दूसरा गुणस्थान रहता। इसी तरह एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय चतुरिन्द्रियके अपर्याप्त अवस्था में भी दूसरा गुणस्थान संभव है। परन्तु ऐसा वह सैनी पञ्चेन्द्रिय जीव जो दूसरा गुणस्थान लगतेही मरण करता वह तेजकायिक और वायुकायिक नहीं होता इसलिये तेजकायिक व वायुकायिकके अपर्याप्त अवस्था में दो गुणस्थान संभव नहीं होता।

दूसरा गुणस्थान चौथे से गिर कर ही होता है। इन्द्रभवन, तुकोगंज।

इन्दौर

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीभाई जुगमंदरदास जी—

संसार आपत्तियों का स्थान है, निराकुलता की यदि कोई स्थिति है तो यह ही है जो सच्चे ज्ञान का उपयोग करके रागद्वेष मोह से रहित आत्मा को बनाया जावे— किसी भी वस्तु को अपनी मानो तबभी अपनी नहीं, न मानो तबभी अपनी नहीं। अपनी मानो

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



तबभी पुण्यके उदय तक साथ है अपनी न मानो तब पुण्यके उदयसे साथ ही है। सच्चा ज्ञान सुख का मूल है अपनी आत्मा की सत्ता आत्मा से नहीं बिछुड़ती आत्मा को निर्मल रखने का प्रयत्न ज्ञान का फल है - आपकी प्रकृति मोक्षमार्ग के अनुकूल है एक स्वाध्याय पर विशेष लक्ष्य रखियेगा।

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई ला० जुगमंदरदास रमेशचन्द जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

जगतमें प्राणीने अनन्तबार वैभव और राज्य पाया पर आत्मज्ञान जो खुद ही में है आज न देखा, आत्मज्ञान की प्राप्ति के लिये कुछ खर्च भी नहीं और न परिश्रम ही करना होता केवल वास्तविकता जानने का उत्साह होना चाहिये। सुख निवृत्ति में है, सबमें बसता हुआ भी यदि अपने आपको आत्मस्वरूप के कारण अकेला ही समझें तो उसकी आकुलतायें सब समाप्त हो जायें। रत्नकरण्ड श्रावकाचार उत्तम ग्रन्थ है उसकी आप स्वाध्याय कर रहे हैं अच्छा है—उसमें जो बात समझमें न आवे उसे आप किसी ज्ञानी से पूछ लिया करें, उपेक्षा न करें, या पत्र द्वारा पूछ लिया करें।

कांधला

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई ला० जुगमन्दरदास जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

धर्मसाधन प्रतिसमय की चीज है केवल मन्दिरकी ही नहीं। वह किस प्रकार कि हर गजह हर स्थिति में आत्मा का और जगत का सत्यस्वरूप लक्ष्य में रखकर अपनी ओर झुकना और कषायों से दूर रहने की साहजिकता होना सो धर्म का पालन है। दूकान पर बैठकर भी यह भाव जिसका रहे कि "मैं तो ज्ञानमात्र हूँ, महाव्रत

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



धारण करने का सामर्थ प्रकट न होने से गृहस्थ धर्म में रहकर अनेक परपरिणतियोंसे बचनेका संकल्प नियम रखते हुये मुझ आत्माका संसार में कौन पदार्थ है, व्यापार का सम्बन्ध तो गृहस्थधर्म को निर्बाध पालने के लिये है" इस तरह दूकान करता हुआ मुनीम की तरह भाव रक्खे तो व्यापार कमाता हुआ भी रुपया पैसा उपार्जित करता हुआ भी कर्मों की यथोचित निर्जरा कर सकता है।

सुख संतोष में है. सुख शान्तिसे जीवनयापन में है सुख सच्चे ज्ञान में है। सच्चे ज्ञान के उपार्जन के लिये अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग करना उच्च सदुपयोग है। आत्म-कीर्त्तन में जो भाव हैं उसका विशेष चिन्तवन करना।

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० जुगमन्दरदास जी रमेशचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि

परंच—आपका पत्र आया—आप लग्नपूर्वक स्वाध्याय करते यही कल्याण का मूल होगा— भाई रमेशचन्द जी अपने स्वाध्याय को नियमित एक घंटा रखना—शेष समय अन्य अध्ययनमें व्यतीत करना—मनको शुभोपयोग में ज्ञानार्जन में लगाना ठीक है— प्रश्नों का उत्तर निम्न प्रकार है:—

(१) पहले गुणस्थान से लेकर बारहवें गुणस्थान तकके जीव छद्मस्थ कहलाते हैं— जिन्हें केवल ज्ञान प्रकट नहीं हुआ वे सब छद्मस्थ हैं।

(२) केवली तो अरहंत और सिद्ध आत्मा है, श्रुतकेवली उन साधुओं को कहते हैं जिन्हें अंगप्रविष्ट और अंगवाह्य रूप समस्त श्रुत का ज्ञान हो गया हो अर्थात् जो ११ अंग १४ पूर्व और सामायिक चतुर्विंशतिस्तव आदि अंगवाह्यके ज्ञानी हों वे श्रुत-केवली हैं।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



द्रव्यकर्म तो ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, आयु, नाम, गोत्र, अन्तराय इन आठ कर्मों को कहते हैं, ये पुद्गल द्रव्य हैं। जिन वर्गणाओंका कर्मरूप परिणमन होता है वे कार्माण वर्गनायें हैं। रागद्वेष मिथ्यात्व आदि विभाव जो कर्म के उदयसे आत्मा में प्रकट होते हैं वे भावकर्म कहलाते हैं। नोकर्म शरीर को कहते हैं। जिस जीव ने जिस शरीर में वास किया हो वह शरीर उस जीव का नोकर्म है।

शीलमहल, इन्दौर
११-८-५२

आ० शु० चिं०
मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई ला० जुगमन्दरदास जी दर्शन विशुद्धि—

परंच—आपका धर्म साधन सानन्द होता होगा—आपके पत्र द्वारा वृत्त अवगत किये, मनुष्य जन्म की सफलता आत्मवान से है, आत्माकी यात्रा मनुष्यभव जितनी ही नहीं। आत्मा तो अनादि से है और अनन्तकाल तक रहेगा, विश्व वैभव भी अपनी सत्ता से है परन्तु है सब स्वतन्त्र, आत्मा का साथी आत्मा का भाव है, अतः आत्मज्ञान की दृढ़ता के लिये स्वाध्याय को भोजन की तरह [क्या भोजन से भी अधिक आवश्यक समझिये।

शिमला
१३—५—५२

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई जुगमन्दरदास जी योग्य दर्शन विशुद्धि।

परंच—आपका पत्र आया समाचार जाने—आपका धर्मसाधन भले प्रकार होता ही होगा। भैया! मनुष्यभव जाने का फल यह है जो शान्ति का सच्चा मार्ग पा जाना, बाह्य वैभव पुण्य का फल है— इस वैभव से आत्माको सत्य बात नहीं मिलती इसलिये इतना जरूर अपना चित्त बनालें वैभव आवे या न आवे उसकी कोई अपेक्षा

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



नहीं भाग्य के अनुकूल तो आता ही, चित्तका खर्च नश्वर वैभवके लिये क्यों किया जावे। शान्ति खुद ही के पास है खुदही में मिलती है, लोक व्यवहार जितना कम होगा उतनी ही शान्ति होगी।

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् ला० जुगमंदरदास जी रमेश जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आपका पत्र आया—क्रियावान द्रव्य २ हैं एक जीव दूसरा पुद्गल+इन दोनोंके मेलका ठाठ यह है सारा जगत है जो माया स्वरूप है—आत्माका वैभव आत्मज्ञान है, किसी भी परिस्थिति में हर्ष विषाद न करना ही बुद्धिमत्ता है। अलौकिक और अमूल्य जो वैभव है वह आत्माका आत्माके पास है उसे न कोई छीनता न हर सकता है। जो छीनी जा सकती हो वह आत्मा की विभूति नहीं। जीवने अनेक जन्म धारणकिये पर उत्तम कुल धर्म जहां प्राप्त हो ऐसा मनुष्य जन्म न पाया था—अब जो हम सब आपने पाया उसकी सफलता मिथ्यात्व हटाने में है धार्मिक परिणाम आत्माके साथी हैं। राग द्वेष तथा जिस पर्यायमें पहुँचे उसीमें आत्मीयताका भाव यह ही संसार व दुःख है—अपने एकाकी आत्मारामके स्वरूप पर दृष्टि दो, शांति उसीमें है।

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्री भाई ला० जुगमंदर दास जी रमेशचन्द्र जी योग्य दर्शनविशुद्धि

परंच—आप सबका धर्मसाधना ठीक चलरहा होगा स्वाध्याय ज्ञानका मुख्य साधन है। स्वाध्याय ही आजकल गुरु है, सच्चा मार्ग बतानेवाला मित्र है। आप हम सब आत्मज्ञान सुखके स्वयं भण्डार हैं। संसारकी असार चीजोंके लोभसे वह महत्व बरबाद हो

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



रहा है । अपने आत्माके ज्ञानके बराबर कोई वैभव नहीं—अतः स्वाध्यायको भोजनसे भी महत्वशाली समझो ।

अपना आत्मा अनादि निधन ज्ञान सुखपूर्ण है—ज्ञाता दृष्टा स्वतन्त्रतासे भिन्नहैं इसके अनुभवका प्रयत्न जरूर करना । आत्मानुभव सार है । शेष सब क्षणिक व्यापार हैं ।

इन्द्रभवन, तुकोगंज — आ० शु० चिं०

इन्दौर — मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई ला० जुगमंदरदास जी रमेशचन्द्रजी योग्य दर्शनविशुद्धि

परंच—अपका पत्र प्राप्त हुआ—आध्यात्मविकासमें प्रवेश करने के लिये निम्नलिखित चर्चाओंको समझलेना जरूरी है:—

(१) उपादान-निमित्त । (२) जीव किसका कर्ता और किसका भोक्ता है । (३) आत्माका सहज स्वभाव व औपाधिक परिणाम ।

१—अपादान वह ही वस्तु होती है जिसमें कार्य कहो या पर्याय कहो याने अवस्था प्रगट होती । निमित्त बाकी सभी पदार्थ हैं जो अवस्था होनेके समय मौजूद हो और जिनकेबिना अवस्था नहीं होती जैसे जीवमें रागद्वेष मोहादिके विकार होते हैं वहां उपादान तो कलुषित भाववाला जीव ही है और निमित्त कर्मका उदय तथा शरीर, मकान, पुत्र स्त्री, कुटुम्ब आदि हैं ।

२—जीव अपने परिणामका ही कर्ता है और परिणामका ही भोक्ता है, अन्यवस्तु अन्यवस्तुकी अवस्थाका कर्त्ता भोक्ता नहीं होता

३—आत्माका सहज स्वभाव है सर्वगुणोंका शुद्ध परिणमन, जैसे शुद्ध ज्ञान, रत्नत्रय परिणमन वीतरागता आदि । आत्माका वैभाविक भाव है जो कर्मोंके उदय निमित्तसे होता है जैसे राग द्वेष आदि विभाव परिणमन सर्वथा नष्ट किया जा सकता है क्यों कि वह निमित्ताधीन है स्वाधीन नहीं है ।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



हस्तिनापुर

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० जुगमंदरदास जी रमेशचन्द्रजी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आपका पत्र आया एक निज आत्माके सिवाय अन्य सर्वपदार्थ और आत्माकी शुद्ध अवस्थाके सिवाय सब अवस्थायें कुछभी आत्माके हितके अर्थ नहीं। लोकमें बड़े न बने तो इतना ही होगाकि लोक न जानेगा परन्तु बड़े बननेके अर्थ जो संकल्प विकल्प का संस्कार बढ़ाया जाता तो इसका फल लोक नहीं भोगता लोकके जानने न जाननेसे आत्माका लाभहानि नहीं, यह बात धनी निर्धन पंडित त्यागी सबके करनेकी है। आजकल प्रायः लोग धनी बनना चाहते हैं, बड़े कहलानेके लिये, ऊंची सर्विस चाहते हैं, बड़े कहलानेके लिये, किन्तु लाभ जिस बात में है उसपर दृष्टि नहीं देते। लाभकी चीज़ है आत्मज्ञान। जो मनुष्य आत्मज्ञानी बनकर सादा रहन सहन भोजनपान नियत व्यापार धार्मिक कर्तव्य करता हुआ अपना समय व्यतीत करे उससे बड़ा हम और किसी गृहस्थ को नहीं समझते।

स्वाध्यायमें १ घंटा नियमपूर्वक समय लगावो।

भाई रमेशचन्द जी! आप अपना धर्म अध्ययन ठीक कररहे हैं। जब तक छुट्टियां हैं कम से कम २ बारमें १-१ घंटा समय अवश्य स्वाध्यायमें देवें। शंकाओंके समाधान इस प्रकार हैं।

१—मिश्रगुणस्थानमें—जो ज्ञान होतेहैं उन्हें न तो पूरी तौरसे सम्यग्ज्ञान कहते और न पूरी तौरसे मिथ्याज्ञान कहते फिर भी सम्यक्त्वकी ओर दृष्टि मुख्यकी है इसलिये तीसरे गुणस्थानमें कहीं अवधिज्ञान कहते हैं। कहीं नहीं भी कहते हैं। जब अवधिज्ञान की विवक्षा हो तब अवधि दर्शन भी होता है। परन्तु यह वर्णन विशेष अच्छा है जो मिश्रगुणस्थान में अवधिदर्शन न कहा जावे

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



क्योंकि उस गुणस्थानमें न तो मिथ्याज्ञान ही कहते न सम्यग्ज्ञान ही कहते हैं अतः ३ मिश्रज्ञान माने गये हैं।

२—चक्षुदर्शनमें—जीव समास इस प्रकार ३ हैं—

(१) चतुरिन्द्रय, (२) असैनी पञ्चेन्द्रिय, (३) सैनीपञ्चेन्द्रिय, धर्माध्ययन में रुचिपूर्वक समय देवे।

शिमला

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई लक्ष्मीचन्द जी जैन योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आपका पत्र आया समाचार जाने—आपका स्वास्थ अब अच्छा होगा-समाचार देना—संसारका जो भी अर्थ दिखाता है वह सब विनाशीक पर्याय है आत्मके हितरूप कुछ भी नहीं, इस आत्माने अनादिसे सबकुछ पाया परन्तु अपने आपकी ठीक पहिचान अब तक न पाई, भैया। समस्त संसारके पुद्गलोंका भी ढेर प्राप्त होजाय तबभी उस सुखकी बराबरी नहीं कर सकता जो यथार्थज्ञान द्वारा सबसे उपयोग हटाकर अपनी समझमें सुख प्राप्त होता।

संसारके प्रायः सभी प्राणी सभी मनुष्य बड़ी तेजीसे जड़ पदार्थके संग्रह रक्षा आदिके लिये दौड़ धूप मचा रहे हैं पर हम आपको उनकी नकल करनेकी जरूरत नहीं, वे भी मरेंगे हमभी मरेंगे याने शरीर छोड़कर चलेजावेंगे फिर मिला क्या, आत्माकी पवित्रताके समान और कुछ धन नहीं कोई सुख नहीं, अतः जगत् के ठाठको धोखा समझकर इनमें रुचि न करना तथा अपने विषय व क्रोध, मान, माया, लोभको भी अपना न मानना क्योंकि ये सदा नहीं रहते, आत्माका स्वभाव नहीं। तो भी जबतक आत्मामें रहते हैं पागल बना देता है तथा व्याकुल कर देता है इसलिये विषय कषाय का त्याग करना व संयम धारण ही परम कर्तव्य है। Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



आपने जो मेरे स्वास्थ्य के ठीक कर लेने के विषय में सम्मति दी उसे मैं मानूंगा ऐसा मेरा विचार है। अब तक भी तो आपकी कोई बात नहीं टाली, अथवा मैंने रागवश आपकी बात के निमित्त अपनी चेष्टा आपके भावके अनुकूल की क्योंकि किसी की बात कोई न मान सकता न टाल सकता यह सब मोहका व्यवहार है। खैर व्यवहार ही सही परन्तु हमारे व आप लोगों के जो परस्पर व्यवहार हैं वे उन्नति में कुछ न कुछ सहायक निमित्त हैं, हानि कुछ नहीं, धर्मवात्सल्य ही इसका कारण है।

सर्वमण्डली को दर्शनविशुद्धि कहिये।

कैराना
१५—६—५०

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्री भाई ला० विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र मिला—संसार का स्वरूप ऐसा ही है जो किसी भी परद्रव्य के सम्बन्ध में ऐसा सोचा जाय कि अमुक कार्य को पूरा करके धर्मध्यान करूं तो निवृत्ति नहीं होती। मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है। बुद्धि के विकास का अवसर मनुष्यजन्म में ही प्राप्त होता है—अतः मैं और कुछ विशेष नहीं कहता – जो आत्म-कीर्त्तन में लिखा है उसी पर ही विचार कर लेना—आपके स्वास्थ्य का अस्वस्थ होने का समाचार जाना सो योग्य उपचार करना एवं शरीरसे भिन्न आत्मा की अनुभूति रूप औषधि भी करना—घर में स्वास्थ्य ठीक होगा। हमारा चातुर्मास इन्दौर ही होगा। आत्मज्ञान आत्मस्थिरता से संसारके सब संकटों की होली हो जाती है— अपनी पहिचान बिना आत्मा अनाथ है—धन परिवार कुछ भी इसे सहाय नहीं है—संसार असार व अनित्य है— अतः भैया पर्याय-बुद्धि हटाकर निजबुद्धिमें भी कुछ समय बितावें— मनुष्यभव बार बार नहीं मिलता।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



दि० जैन मन्दिर नशियां
मल्हारगंज, इन्दौर
१२-७-५२

आ० शु० चिं०
मनोहर वर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान भाई ला० विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका स्वाध्याय ठीक हो रहा होगा— तदनन्तर मेरा स्वास्थ्य ठीक है— आपका व आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य ठीक होगा, स्वाध्याय सामायिक प्रतिदिन होता ही होगा, आत्मा संसार में अकेला ही है क्योंकि कोई पदार्थ किसी पदार्थ में तन्मय होकर परिणमन कर ही नहीं सकता ऐसा वस्तु स्वभाव है। तब वस्तु स्वभाव को मानकर उसके अनुकूल अपने को बनाकर अर्थात् आत्मा को ज्ञाता द्रष्टा बनाकर अपूर्व शांति का अनुभव करना लोकोत्तम कार्य है। आत्मदृष्टि में ही पूर्ण संतोष आता, कृतकृत्यता आजाती, बाह्य तृष्णा में न संतोष का अवसर है न कार्य ही पूर्ण होते। लोग तो कर्मबद्ध होने से प्रकृत्या भौतिक पदार्थ के संग्रह की ओर झुके हैं। लोगकी प्रवृत्ति से अपने सत्पथ का निर्णय नहीं होता। केवल आत्मदृष्टि से अपने पथका अनुसरण होता। यह आत्मदृष्टि भेद विज्ञान से प्राप्त होती। भेदविज्ञान स्वाध्याय और भावनासे प्राप्त हो सकता अतः स्वाध्याय सामायिक को बढ़ाना अच्छी बात होगी। विशेष क्या लिखूं आप स्वयं प्रतिभासम्पन्न है। सर्व मण्डली को दर्शनविशुद्धि कहिये।

कांधला

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया। श्री ब्र० सुमेरचन्द जी भगत अभी तक तो यहां नहीं आये। सम्भव है देहली या अन्यत्र हों।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



संसार में शरणभूत यदि कुछ है तो 'निर्मोहता'— किसी का कहीं कुछ भी नहीं है, सर्व आत्मा अपने अपने में परिणमन करते जा रहे हैं, इस यथार्थता का पता न लगना सबसे बड़ी विपत्ति है इस यथार्थता का अनुभव में उतर जाना सबसे बड़ी संपत्ति है। वाह्यपदार्थ तो छूटने को ही है, किसी तरह छूटो।

श्री ला० किशोरीलाल जी वहां आये थे। उनसे मालूम हुआ कि आपकी गृहिणी कुछ बीमार है, उनको दर्शनविशुद्धि कहना और कहना कि वाह्य इलाज तो वाह्य है ही, सबसे बड़ी चिकित्सा है समता। दोनों समय पञ्चपरमेष्ठीका ध्यान करो, सामायिक करो, अपना स्वभाव विचारो। जो उदय में आता उसे सहना ही है शांति से सहो तो घरके लोग भी व्याकुल न होंगे और आपके निर्जरा होगी।

आपके पिताजी को दर्शनविशुद्धि आप सर्वसम्पन्न हैं, अथवा आपका यहां है भी क्या। आपका क्या किसी का भी है क्या? अन्तरंग में ममता न रक्खो, कर्त्तव्य करना और बात है तथा गृद्धता और बात है। प्रतिदिन सामयिक स्वाध्याय करिये। श्री १०५ क्षु० निजानन्द जी हो तो इच्छाकार कहना। समाचार देना।

इटावा

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्री भाई विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया समाचार जाने। आप अपने घर पर भी प्रातः शीघ्र उठकर १ घंटा स्वाध्याय करने का अभ्यास कीजिये। यदि उचित समझें तो देहात के मन्दिरों में जहां स्वाध्याय को ग्रन्थ नहीं हैं कहीं कहीं सस्ती ग्रन्थमाला के सैट भिजवादें या जो मुन्सरिम साहब समझें।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



सबसे दुर्लभ वस्तु है रागद्वेष न करके अपनी प्रकृति का स्वाद लेना, शरीर अनन्त पाये, वैभव अनन्तबार पाये, परिवार अनन्त पाये, कुछभी आत्माको शरण नहीं हुआ बल्कि आत्माको दुखी बनाने आकुलित बनाने में सब सहकारी हुआ। मूर्छा आत्मा का घात करने वाली वस्तु है। जैसे लोग कहते हैं कि अंग्रेजों ने हंसा हंसा के लूटा, चारित्र गिराया, यह सब तो कल्पना ही है। वास्तव में मूर्छा ने हम सबको बरबाद किया। अकेलेपन में अनन्त आनन्द है इसकी रुचि नहीं रखना चाहता मोही प्राणी, परके लिये मरा जाता है परन्तु पर अपना कुछ होता नहीं। मैं भी यह पत्र लिख रहा हूँ इसकाभी कारण स्नेह है परन्तु मोहियोंका जैसा परिवार में है वैसा नहीं। आपका पत्र आया, आपको धार्मिक जानकर स्नेह हुआ, परन्तु इतनी आकुलता नहीं जो आप मेरी बात मानें ही मानें। हां भावना जरूर ऐसी है जो कभी १ मिनट भी क्या १ सेकिण्ड भी रागद्वेष न करके आत्मप्रकृति का स्वाद ले लें। जो बात मुझे रुच गई वह आपको भी हो जाय स्नेहमें ऐसी ही कल्पना होती है। इस बात को पाने के लिये पहिले सामायिक आदि में जिस जिस पर राग हो उसकी असारता विचारें, फिर अपने राग परिणाम की असारता विचारें, फिर कुछ सोचना बन्दकर आराम से रह जाय। ऐसे अभ्यास में आप कोई ऐसा स्वाद पावेंगे जो शान्ति सुखका सच्चा उपाय है। यह पैराग्राफ सबको सुना देना जो स्वाध्यायमें आते हों। शेष सर्व कुशलता है।

इटावा

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्री भाई विमलप्रसाद जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

परञ्च—आपका धर्मध्यान सकुशल हो रहा होगा— अनादि निधन स्वकीय आत्मा के संसार दुःखों से छूटने के [illegible] में भी

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



चिन्तवन कभी कभी होता होगा— संसार तो मेला है। स्वयंके हितका विचार व प्रयोग होने में कुशलता है—मेरा स्वास्थ्य ठीक है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। आत्महित तो हर अवस्थामें किया जा सकता, परवस्तुका परिणमन बाधक नहीं हो सकता। हम ही स्वयं अपनी कल्पनायें करते रहते हैं तब बताइये परबाधक रहा या निजकी कल्पनायें। संसार में आत्मा अनन्त हैं, सब समान हैं, अपने से सब जुदे हैं, परिवार में जिनका समागम होता वे भी उतने ही जुदे हैं जितने कि मानेहुए दूसरे लोग। जिस दृष्टिमें अपना माना जाता वह तो भ्रमदशा है। आत्मा के महान् भवितव्य का उदय वह है जो आत्मज्योति की पहिचान होकर उसी में स्थिरता हो। आप विवेकी सत्पुरुष हैं क्या लिखें, हमें लिखना भी क्या था, पर पत्र देना था तब क्या लिखें, खाली भेजना भी तो काषायने न चाहा। आपका सत्य कल्याण हो यही मेरी भावना है।

२३ अगस्त सन् १९५१ — आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्री भाई विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आप प्रसन्न होंगे। आपका समाचार पत्र नहीं आया सो देना। अपनी गृहिणी के स्वास्थ्य से आप निराकुल होंगे, समाचार देना।

आत्मा अकेला है। आप भी अकेले ही हैं। सारा सम्बन्ध मायारूप है—तत्वतः कोई किसी का नहीं। हम भी केवल रागकी चेष्टाकर आपको पूर्तिका आश्रय बना रहे हैं। उस अकेले आप आत्मा की खबर रखना। कोई साथी नहीं होगा। आपकी उपार्जन की हुई निर्मलता काम आवेगी।

३१ जनवरी सन् १९५१ — आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



श्रीयुत ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आप सकुशल धर्मसाधन कर रहे होंगे। मनोहर को करीब २० दिन से चौथिया या तिजारी ज्वर था। अब शान्त सा मालूम होता है। इसकी बारी चतुर्दशीको थी। उस दिन उपवास था। उस दिन बाधा नहीं थी। शायद अब न आवे।

शास्त्र सभा आपकी होती ही होगी। जिस किसी भी प्रकार यदि एक यहही दृष्टि बन जाये कि मैं आत्मा स्वतन्त्र अविनाशी अपनेसे अपनेमें परिणमने वाला हूँ, कोई भी आत्मा मेरा न विरोधक है और न विरोधक हो सकता है इस विचारसे किसी आत्माके प्रति बैर विरोधका भाव न उठे तो बहुत कुछ पा लिया।

जगत विनश्वर है। कोई किसीका साथी नहीं। विचित्र यात्रा है। यात्रामें भ्रम करने वाले इतस्ततः यात्रा ही करते रहते। भ्रम न करने वाले अपने पदमें पहुँचकर विश्राम पालेते हैं। आप सबका कल्याण हो।

श्री ला० विमलप्रसाद जीको दर्शनविशुद्धि। स्वाध्याय सभामें आते होंगे या प्राइवेट ही शास्त्र पढ़ते होंगे।

मेरठ शहर — आ० शु० चिं०
१२—१—५२ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान भाई ला० चेतनलाल जी, ला० किशोरीलालजी, ला० विमलप्रसाद जी, ला० जिनेश्वरदासजी, ला० लच्छीराम जी, बा० समन्दरलाल जी, बा० वासुदेवप्रसादजी आदि सर्व बंधुगण योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आप सर्व सकुशल धर्मसाधन करते होंगे। धर्म मिथ्यात्व, क्रोध, मान, माया, लोभको दूर कर देना है क्योंकि इसीमें शान्ति है। इस योग्य अपने विचार बनानेका प्रयत्न करना व्यवहार धर्म है।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



जीवन क्षणिक है। फिर क्या हो ? कैसे तत्व जाननेका उपाय मिले ? अभी तो सर्व योग्यता है। सम्यग्दर्शन भावको दृढ़ रखनेका उद्यम करना। यदि विशेष झंझटमें नहीं पड़ना तो सम्यग्दर्शनके आठ अंग कहे हैं इनको अमलमें लाने का प्रयत्न करना। वे अङ्ग कौन कौन हैं उनका क्या स्वरूप है ? आप अपने स्वाध्यायमें चर्चा कर लीजिये और आठों पर क्या अमल किया रोज का हिसाब रखिये। भाई मूलचन्दजीको दर्शनविशुद्धि—
आप अर्थप्रकाशिका को जरूर अवलोकन करें।

आ० हितचिन्तक
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान भाई ला० चेतनलाल जी, ला० किशोरीलाल जी, ला० विमलप्रसाद जी, ला० समन्दरलाल जी, भैया मूलचन्द जी आदि योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आप सर्व सानंद धर्म साधन करते ही होंगे। मैं आज सुबह सदर मेरठ आ गया हूं। मेरे इस समय सिर दर्द है। विशेष कुछ नहीं लिखता। मेरा तो यह कहना है जो इस छंद पर अमल हो।

"पुण्यपाप फलमांहि हरष विलखो मत भाई।
यह पुद्गल पर्याय उपजि विनसै फिर थाई॥
लाख बात की बात यही निश्चय उर लावो।
तोड़ सकल जग दंद फंद निज आतम ध्यावो॥"

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत ज्ञानगोष्ठीके सभ्यगण श्री ला० चैतनलाल जी आदि योग्य दर्शनविशुद्धि—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



परंच—आपका पत्र आया। जगतमें जितने द्रव्य हैं वे सब स्वतन्त्र हैं, स्वयं सत्तावाले हैं, परस्पर भिन्न हैं, अकेले ही परिणमने वाले हैं, स्वयं का स्वयं ही है, किसी का कोई नहीं क्योंकि द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सबका पृथक है इस श्रद्धामें शान्ति मार्गका प्रारम्भ है अन्यथा काल तो अनंत व्यतीत हुआ ही है आगे व्यतीत होनेमें क्या बाधा है ?

इस प्राणीने परद्रव्यके निमित्तसे होनेवाले भावका परिचय और अनुभव तो बार बार किया परन्तु ज्ञानमात्र आत्मतत्वका परिचय एक बार भी नहीं करता, यदि भेद विज्ञान की छैनी से आत्माके स्वभाव और पुद्गलके निमित्तसे होने वाले बंधभावके बुद्धिमें टुकड़े करके चेतन स्वभावको बुद्धिमें उपादेय बनाले और बंध भाव को बुद्धि में ही हेय कर डाले तो संसार संतानका नाश हो जाये और दुःखोंका अन्त हो जाये।

आत्माका जो स्वभाव है उसही रूप रहनेमें आपत्तियोंका अभाव है। उसके विरुद्ध चलने याने साक्षी न रहकर रागीद्वेषी बननेमें आपत्तियोंका प्रसार है।

वैभव तो अचेतन है। वह तो आत्माकी जातिका भी पदार्थ नहीं। वह तो आत्माका होगा क्या ? परन्तु अन्य विश्व आत्मा भी अपनी सत्ता से पृथक हैं। आत्माका आत्मासे नाता नहीं, तथापि आपकी मंडलीमें जो किसी धर्मात्माका धर्मात्मामें वात्सल्य हो तो धार्मिकताका ही रूप रखेगा। अतः आप सब परिवारजनोंमें मित्रोंमें यही बुद्धि रखें जो परिवारका समागम सत्य मित्रोंका समागम इस ही लिये है जो परस्पर धर्मके बढ़ानेमें सहकारी ही रहे और ऐसी ही शिक्षा, ऐसा ही व्यवहार हो जिससे धार्मिकता का उदय रहे।

चौबीसों घंटे की चर्यामें भी ऐसी चर्या हो जो प्रत्येक बात धार्मिकतासे रहित न हो—व्यापार को लोगोंने प्रतिष्ठाका साधन

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



बना रखा है मगर बात ऐसी नहीं है। व्यापारका प्रयोजन भी धार्मिकता है गृहस्थोंके लिये जहां व्यापार भी धर्म साधनके लिये उपयोग्य हो जाता हो वहां फिर कौनसी ऐसी बाधा है जो धार्मिकता के मन बचन काय बनाये रखनेमें विघ्न कर सके।

भव्य बन्धु—अनंत भव पाये वैभव पाये एक भवज्ञानके लिये ही अर्पित समझ लेवें तब लोकैषणासे अवकाश पाकर कल्याणमें अनुत्साहके अभावसे शान्तिमें स्थित हो सकते।

जीवनका जीवनमें जो मुख्य लक्ष्य होता है वह अर्थ-क्रियाकारी होता है। यदि मनुष्यभव पानेका यह ही लक्ष्य दृढ़तासे सोच लिया जाय कि ज्ञानमात्र स्थिति बनानेका ही मेरा काम बाकी है, साक्षी, विराग, ज्ञाता दृष्टा रहनेके लिये ही अब मेरा अस्तित्व है तब इस परमस्थिति की ओर ही मन वचन काय की रफ्तार रहेगी।

मैं अधिक क्या लिखूं—शान्तिका सम्बन्ध मात्र शास्त्र ज्ञानसे नहीं, वह तो स्वभाव साध्य है सो आप सर्व मंडली की विशेषता भी यहही है। अतः पानेमें विलम्ब न होगा।

मेरी अंतर्भावना यह ही है जो शान्तिका स्वरूप व्यक्त होकर सच्चा स्वातन्त्रय प्राप्त हो, तथा धर्मात्माजनोंके विकासके प्रसादसे मैं भी तथा होऊं।

श्री ब्र० जीवाराम जी सकुशल हैं। उनका दर्शनविशुद्धि श्री ला० किशोरीलालजी, ला० जिनेश्वरदास जी, ला० विमलप्रसाद जी आदि सर्व बंधुओंको दर्शनविशुद्धि—भाई मूलचन्द जी दर्शनविशुद्धि।

मेरठ—मई, ५१ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच आपका पत्र आया—वृत्त अवगत किए।

आपका [illegible] ठीक हो रहाही होगा। धर्म तो उपेक्षा

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



भाव ही परमार्थ है। कोयले की दलाली में काले हाथ होते हैं। पर तो भी उस दलालीमें पैसे हाथ आते। लेकिन परपदार्थोंको आत्मीय माननेकी दलालीमें तो मिलना तो दूर रहा प्रत्युत अनन्त-शक्तिमान यह शक्ति रूप भगवान स्वांग धर धरकर दुःखी होता है। धर्मदिखाने की चीज नही, दिखाने की चीज नहीं, लोगों के वोट पर भी निर्भर नहीं, लौकिक इज्जत पर भी निर्भर नहीं, परमेश्वर पर भी निर्भर नहीं। धर्म तो आत्मरूप है। वह हममें हमसे प्रकट होता है। उसके प्राथमिक वाह्य साधन हैं— सज्जन-सम्बन्ध, परमात्मोपासना। भाई जी यदि निर्मोहता और आत्मज्ञान का उदय होजाय तो इससे बढ़कर तो कोई वैभवही नहीं। "चक्रवर्त्ती की सम्पदा, इन्द्र सारिखे भोग। काकबीट समगिनत हैं सम्यग्दष्टि लोग।"

सब भाइयों को दर्शनविशुद्धि कहिये— भाई विमलप्रसादजी को दर्शन विशुद्धि कहिये। उनका पत्र देहरादून का भेजा हुआ कल प्राप्त हुआ था। आप सब अपनी धर्ममंडली में आने व सम्मिलित होनेको विमलप्रसाद जी को खींचते रहें। ये क्यों भागे भागे रहते। उनका स्वास्थ्य अब कैसा है? भाई किशोरीलाल जी, छुट्टनलाल जी आदि से दर्शनविशुद्धि।

इन्दौर
११—७—५२

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० चेतनलाल जी ला० किशोरीलालजी ला० जिनेश्वर दासजी ला० विमलप्रसादजी बा० समन्दरलाल जी ला० मूलचद जी आदि सर्वमंडल—योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका धर्मसाधन ठीक हो रहा होगा। इन्दौर से एक जैनबंधु आजसे ही सुबह इन्दौर ले जाने के लिये आगये हैं।

आपकी और समाज की उन्नति के विशेषरूप दो साधन हैं।

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



१ आप लोगों का स्वाध्याय व २—धर्म शिक्षा सदन। हम लोगों का जाना सम्भवतः इन्दौर होगा। सच्चा व्यापार या सेवा यह ही है—जो पर्यायबुद्धि दूर होकर निज द्रव्य के त्रिकालस्थायी स्वभाव पर लक्ष्य हो जिससे मोह राग द्वेष का बन्धन दूर हो। कौन किसे जानता फिर किसे प्रसन्न करना है किससे शत्रुता करना है? सभी आत्मा यहां पर रागद्वेषज दुःखसे दुःखी होनेसे से गरीब हो रहे हैं। अपनी अपनी गरीबी मिटालें यही बड़ा नेतृत्व है।

हम लोग आपका विशेष कोई कार्यमें निमित्त नहीं होसके इसका रागजन्य खेद है क्योंकि यदि इन्दौर जाना हुआ तब आगे का प्रोग्राम कुछ नहीं कह सकते क्योंकि वहां भी बहुतसा जैनसमाज है। हमारी भावना है जो आप सब सम्यक्त्वमें स्थिर होकर अपना उत्थान करें।

ब्र० जीवाराम जी का दर्शनविशुद्धि।

शिमला आ० शु० चिं०

५—६—५२ मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्री भाई धर्मवत्सल ला० चेतनलाल जी तथा सर्वभव्य मंडल

योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आपका पत्र आया—अध्यात्मपंचसंग्रहकी भाषा जयपुरी है। जो पंक्ति समझ में न आवे उसे कुछ पहिले से और कुछ बाद तक २–३ बार पढ़े और फिर भी समझ में न आवे तब पत्र द्वारा लिख देना कि पृष्ठ नं० अमुक पर अमुक पंक्तिका अर्थ लिखो। कठिन ग्रन्थ तो अवश्य पढ़ना चाहिये चाहे १५ मिनट पढ़े, कठिन भी सरल इसी तरह होते हैं। हमारी व आपकी भी परिणति सब वर्त्तमानके लौकिक विचारोंके आधारसे हो जाय सो नहीं है—एक निज आत्मतत्त्वका विकास तो ऐसा है कि उसकी ओर झुक जाय लग जाय पीछे पड़ जाय तो उसे होना पड़ता। परन्तु इष्टानिष्ट

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



पदार्थोंका संयोग-वियोग हमारे विचारसे ही होजाय सो नहीं क्योंकि वह परवस्तु है।

भाई ! दुःख की कोई बात नहीं। हम यहां चले आये तब भी क्या है। पोस्टविभाग की तो अब भी कृपा है।

आपने जो प्रगति की है मेरा विश्वास है कि वह ऐसी प्रगति है जो बचनों में कही नहीं जा सकती, किसी के (मेरे बिना) बिना रुक नहीं सकती।

चातुर्मास में आप इस प्रकार प्रोग्राम रख सकें तो अच्छा है प्रातः करीब ५ या ४॥ बजे सामायिक। फिर शुद्धिसे निवृत्त होकर स्नान बन्दना, फिर शास्त्रसभा, फिर भोजन व्यापारादि। सायं सामायिक फिर बच्चों के धर्माध्यापन का कार्य या सहयोग आदि, फिर शास्त्रसभा, फिर तत्त्व चर्चा, फिर शयन। इस तरहका कार्यक्रम हो - इस बीचमें प्रातः दोपहर कभी जब योग्यता देखे कोई समय थोड़ासा स्वतन्त्र स्वाध्याय करे। एक अध्यात्मग्रन्थ अवश्य सभामें रखना। अध्यात्मपचसंग्रह भी उत्तम ग्रन्थ है—

भाई ला० किशोरीलाल जी, भाई मूलचन्द जी, भाई बासुदेव जी, भाई समन्दरलाल जी, भाई जिनेश्वरदास जी भाई विमलप्रसाद जी आदि सर्वमंडल को दर्शनविशुद्धि।

यहां सेठजी का बहुत ही अधिक शब्दोंमें चातुर्मासका आग्रह है— शेष सर्वकुशल। यहां इन्द्रभवनमें एक वैराग्यभवन है उसमें हम व ब्र० जीवाराम जी रहरहे हैं। मौन में अधिक समय व्यतीत करता हूँ। स्वाध्याय का समागम अच्छा है।

इन्द्रभवन, तुकोगंज, इन्दौर
२५—५—५२

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका धर्मसाधन सानन्द होता होगा— १ पुस्तक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



अध्यात्मपञ्चसंग्रह भेजी है— १० मिनट इसे भी अपनी शास्त्रसभा में पढ़ना—आध्यात्मिक अच्छा ग्रन्थ है। आत्मस्वरूपका निश्चयनय से वर्णन इसमें अच्छा किया है। श्री भाई किशोरीलाल जी भाई मूलचन्द जी भाई विमलप्रसाद जी आदि सब वंधुओं को दर्शन-विशुद्धि कहिये—

स्वाध्याय सामायिक पर विशेष ध्यान देवें – सर्वभव्यमंडलीका जो स्वाध्याय द्वारा विशेषज्ञानका विकास हुआ है उसके प्रति मेरी भावना है कि यह विकास आपका होता हो तो शान्ति की चरमसीमा को पहुँचे।

इन्द्रभवन, तुकागंज, इन्दौर — आ० शु० चिं०

१६—६—५२ — मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई चेतनलाल जी आदि सर्वमंडली—योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच – आप सबका धर्मसाधन ठीक हो रहा होगा। जबसे ला० किशोरीलालजी छुट्टनलालजी आये तबसे आपका कोई पत्र नहीं आया सो सबको अचम्भा है—आप लोग आने से पहले पत्र डालदें कि कब आ रहे हैं तो स्टेशनसे यहां आनेमें कोई कष्ट न होगा।

व्यय और उत्पादका समय एक है जो नवीन पर्याय का उत्पाद है वही पूर्व पर्याय का व्यय कहलाता है। इस विषय को प्रवचन-सारमें ज्ञेय अधिकारको पढ़िये। जैसे किसी घड़े को दंडसे फोड़ दिया तब खपरियां हो गईं। वहां खपरियां होना और घड़ा न रहना दोनों एक समयमें हैं। प्रवचनसार के ज्ञेय अधिकारको अवश्य पढ़ना। जो देवायुके उदयका प्रथमक्षण है वही मनुष्यायुके अभाव या व्यय का समय है क्योंकि देवायुके उदय से पहले मनुष्यायु का उदय है उसे मनुष्यायुका व्यय नहीं कह सकते। इस विषयमें जो आपको बात न बैठे तब आप यहां आ रहे हैं आपको मौखिक कहूँगा।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



भाई ! मनुष्यभवके कितने वर्ष गुजर गये उनमें क्या लाभ हुआ इस पर विचार करके कोई अलौकिक बात मनमें जमाने का प्रयत्न करना। किसी दिन शरीर से निकलकर भी जाना होगा तब वर्तमान वैभव की कथा ही क्या ? किसीका कोई संभालनेवाला नहीं। अतः कर्त्तृत्वबुद्धि को दूर करके निजविश्राम का उद्योग उचित है। सब सानन्द है।

आ० शु० चिं०

शीशमहल, इन्दौर

मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० चेतनलालजी आदि सर्वमंडली योग्य दर्शनविशुद्धि—

आपका कार्ड आया— और ला० किशोरीलाल जी ला० छुट्टन लाल जी व आपके आने के समाचार विदित किये। यहां के भाई आपके आने के समाचार सुनकर प्रसन्न हुए। पूर्वपत्र में जो आपने प्रश्न पूछे हैं उनका उत्तर निम्नप्रकार है—

१—भव्यत्वगुणका विपाक (फल) प्राप्त हो चुकने से सिद्ध भगवानके भव्यत्व गुणके नाश का वर्णन है "औपशमिकादि भव्यत्वानांच।" जैसे कोई छात्र तीसरी कक्षा पास करने पर "चौथी के योग्य" कहा जाता परन्तु चौथी पास करके ५वीं कक्षा में पहुँचने पर "चौथी के योग्य" उसे नहीं कहा जाता है भव्यत्वगुण रत्नत्रय प्राप्त करने योग्यको कहते हैं, सिद्ध होने पर "रत्नत्रय प्राप्त या पूर्ण करने के योग्य" कैसे कहा जावे। दूसरी बात— पारिणामिक भाव ३ हैं— १-जीवत्व, २-भव्यत्व, ३-अभव्यत्व। उसमें जीवत्व के २ भेद हैं— १-चैतन्य, २-प्राणजीवत्व। चैतन्यको परमपारिणामिक कहते हैं। परमपारणामिक का अभाव कभी नहीं हो सकता। प्राणकर जी ने रूप जीवत्व का सिद्ध भगवान में अभाव है, भव्यत्व का अभाव है। रही अभव्यत्व की बात सो अभव्यत्व का नाश हो जाय तो भव्यत्व बन जाय या सिद्ध हो जाय सो हो नहीं सकता। अभव्य कभी रत्नत्रययुक्त नहीं हो सकता सो अभव्यत्व का कभी

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



नाश नहीं होता। शंका यह भी हो सकती है कि फिर भव्यत्व को पारिणामिक क्यों कहा? भाई जी पारिणामिक का अर्थ यह है— जो कर्म के उदय, उपशम, क्षय, क्षयोपशम से जो न होवे स्वयं हो वह पारिणामिक है—सदा रहे वह पारिणामिक है ऐसा अर्थ तो नहीं किया। चैतन्यभाव परमपारिणामिक वह कभी नष्ट नहीं होता।

२—मन, वचन, काय के परिस्पंद के निमित्त से आत्म प्रदेशों के परिस्पंद होनेको योग कहते हैं वह बुद्धिपूर्वक हो या अबुद्धिपूर्वक। योग एक समय में एक होता है।

३—प्रत्येक द्रव्य उत्पाद व्यय ध्रौव्ययुक्त है। आत्मा में—जैसे मनुष्यनष्ट देवउत्पन्न आत्माध्रुव। विशेष— जैसा आपने पूछा अंतिम समय में मनुष्य पर्याय है— इसके अनन्तर समयमें देव पर्याय है, अब यहां यह बताना कुछ कठिन है कि मनुष्य पर्यायका नाश कहां हुआ, जैसे ४० वें सैकंड में मनुष्य है ४१ वें सैकंड में देव है यहां सैकंड को समय मानलो। ४० वें समय में मनुष्यायुका क्षय नहीं कह सकते क्योंकि वहां मनुष्यायुका उदय है। ४१वें समय में मनुष्यायु का क्षय या मरण कैसे कहें वहां तो मनुष्य ही नहीं किसका मरण—तो भी उत्पाद व्यय एक साथ होते हैं अतः जो देवका प्रारम्भ समय है वह मनुष्य का व्यय समय है इसलिये उत्पाद व्ययका भिन्न समय नहीं। ४० वें सैकंडमें तो न देवका उत्पाद है न मनुष्य का क्षय है। और देखें जैसे आप छुट्टनलाल जी को इन्दौर या बाहर जाते समय भेजने को स्टेशन तक आये। ला० छुट्टनलाल जी तो आगे चले गये और आप स्टेशनसे लौटगये बताओ आपका छुट्टनलाल जी से वियोग कहां हुआ? स्टेशन से स्टेशनपर कहो तो वहां तो आप थे ही झूठ क्यों कहते? आप यही तो कहोगे - झूठ नहीं है। और झूठ है भी नहीं। इसी तरह व्यय कहो वियोग कहो देवायुके प्रथम समय में कहा जाता है वही देवका उत्पाद है वही मनुष्यका व्यय है। ला० किशोरीलालजी जयानंद

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



जी ला० लच्छीरामजी आदि सबको दर्शनविशुद्धि—ब्र० जीवानन्दजी का दर्शनविशुद्धि। भाई जी कल्याणतो मिथ्यात्व क्रोध मान माया लोभ—इन पांचकुपब्बों के प्रपञ्चों के हटाने में है—हमें कोई जानता ही नहीं असहायसंसार में फिर रहा ऐसा समझकर लौकिकता में अन्तरंग से होलीकी आग सुलगाकर अलौकिक होनेका लक्ष्य रखिये, यही चैतन्यप्रभुकी वह आदर्श लीला है जिस लीला के बाद फिर लीला न करना पड़े। शेष सर्व अच्छा है। जो हो सो अच्छा क्योंकि होने बिना तो रहता नहीं अतः अच्छेमें ही सब शुमार है शुद्धदृष्टि के पास जाने या रहने या लक्ष्य करने वालों को शुद्ध दृष्टि का व्रत रखिये फिर कुछ बुरा है ही नहीं। आ० शु० च०

शीशमहल, इन्दौर २५—६—५२ मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच— आपका पत्र मिला वृत्त अवगत किये— खण्डवा सनावद जैन समाजके महान् आग्रह पर मेरा अन्यत्र जाने का वश न चला। श्री ब्र० जीवानन्द जी व श्री जयानन्द जी आपके प्रान्तमें पहुँचे हैं वे मेले पर जावेंगे। 'होता स्वयं जगत परिणाम मैं जगका करता क्या काम।' गुरुकुलको उत्तरप्रान्तीय समाजकी सद्भावनायें चलावेंगी। मैं अपने को ही जो अध्यात्ममार्ग निश्चित कर चुका उस पर चला नहीं पा रहा तब परपदार्थ जो सर्वथा भिन्न हैं उनपर मुझ आत्माका कोई वश नहीं। मेरी सद्भावना अवश्य यह है जो अग्रवालसमाज में धार्मिक संस्कृति सुदृढ़ बनी रहे और आप सबके आत्मोत्थान के लिये यह तन मन वचन सब कुछ अर्पित हो जाये क्योंकि यह तन मन वचन तीनों विनाशीक पर है इसका सदुपयोग हो और इस निमित्तसे दर्शनज्ञान चारित्र की परिणति अशुभ उपयोग से हटे इसमें मुझे प्रसन्नता है। उत्तरप्रान्त के धार्मिकसुधार के लिये भविष्य में अन्य समाजोंके आक्रमण

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



से बचानेके लिये आपका गुरुकुल बहुत काम आवेगा। और आपने लिखा कि हस्तिनापुरमें समाजको बहुत लाभ होगा सो भाई जी. मैं तो अपनेको अकिञ्चित्कर समझता हूँ। फिर भी मेरा आपके यहां आनेका प्रयत्नका यही प्रोग्राम था परन्तु खण्डवा सनावद समाजके करीब १०० से ऊपर प्रमुख महानुभाव खबर पाते ही सत्याग्रह करने आये मैं उस समय क्या करता। शेष सब शुभ है। समस्त मंडलीको दर्शनविशुद्धि कहिये।

अपने अनादि अनंत अचल ज्ञान सामान्यतत्वका चिंतन कर बाह्य विकल्पोंको त्यागकर कर्मों के संवर और निर्जरा करनेके पात्र बने रहें यही मेरी भावना है।

खण्डवा (सी० पी०) — आ० शु० चिं०

२६-१०-५२ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० चेतनलालजी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आप सबका धर्म ध्यान ठीक हो ही रहा होगा। अपने विषयमें ऐसा निरन्तर भावना व विचार रखना श्रेयस्कर है कि मैं अनादि अनंत अचल अपने आपसे अनुभवमें आने वाला समस्त पर द्रव्य गुण पर्यायोंसे भिन्न चैतन्यस्वरूप हूँ। भाई मूलचन्दजीको दर्शनविशुद्धि कहिये। समस्त मंडली को दर्शनविशुद्धि कहिये।

खंडवा — आ० शु० चिं०

२३-१०-५२ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई लाला चेतनलालजी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच आपका पत्र आया। वास्तविक सुख तो शुद्ध चिद्रूप रहनेकी स्थितिमें है जिसके बाद फिर सुखकी बात ही नहीं करना पड़ती—वह स्वभाव सबमें है परन्तु अहितकारी विकारी अनर्थकारी मोह भावसे तिरोभूत है। भेद विज्ञान द्वारा अज्ञानान्धकार दूर

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



होते ही आत्माके सभी गुण अपनी मलीन पर्याय छोड़नेमें उन्मुख हो जाते हैं। इसलिये धर्मके लिये केवल विचारात्मक प्रयत्न करना है और वह किसी भी स्थान व समयमें हो सकता है। वह है भेदविज्ञान। श्री ब्र० जीवानन्दजी का दर्शनविशुद्धि। शेष सर्व शुभ। श्री ला० मूलचन्दजी किशोरीलाल जी आदि सर्व मंडलीको दर्शनविशुद्धि। श्री ब्र० श्रद्धानन्द जी पहुंचे या नहीं सो लिखना।

इन्दौर　　　　　　　　　　　　　　　　　　आ० शु० चिं०

१४-६-५२　　　　　　　　　　　　　　　　　मनोहर

卐　　　卐　　　卐

श्रीमान् भाई ला० चेतनलालजी ला० किशोरीलालजी लाला जिनेश्वरप्रसाद जी ला० विमलप्रसादजी आदि सर्वबन्धुगुण योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आप सर्व सानन्द धर्म साधन करते होंगे, वास्तवमें तत्व समस्त अदृश्य हैं। दृश्यमान सब जीव पुद्गलका विकार है। आत्मा ज्ञायकभावमय है। उसे जगतमें कौन पहिचानता है, अन्य अन्यको पहिचान भी नहीं सकता, खुद ही खुदको पहिचान सकता, अपनेको ज्ञायक स्वीकार करनेपर पुनः प्रतीत होता है कि मेरे तो न वर्ण है, न जाति है, न देश है, न धन है, न देह है, न अन्य त्राता है मैं स्वयं केवल ज्ञायक रहकर ज्ञानी और सुखी हूं। जगतके सब पदार्थ स्वतन्त्र है किसीका कोई पदार्थ न स्व है न स्वामी है। यह आत्मा स्वयं स्व है स्वयं स्वामी है वस्तुस्थिति ऐसी है। अतः ऐसी दृष्टि कल्याणका मूल है। इस स्वरूपसे विरुद्ध दृष्टि अर्थात् अन्य कुछ भी मेरा है ऐसी मान्यता संसारका मूल है। कोई भी आत्मा किसी परपदार्थका कुछ भी बिगाड़ या सुधार नहीं कर सकता, केवल इतनी बात है जो सुधारका भाव करके पुण्यबंधक होता है और बिगाड़के भाव बनाकर पापका बंध करता है। निरंतर शुद्ध आत्माकी भावना रहनी चाहिये। अन्य भावनायें सब बन्धक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



हैं। यदि यह न हो सके तो शुभ भाव परका हित हो ऐसा ही भाव रखना संभवतः परस्पर या कल्याणका कारण है। आप लोगोंकी मंडली बहुत ही प्रशंसनीय है, क्रोध मान, माया, लोभकी मंदता आप लोगोंमें जो है यही सुन्दर होनहार बना देगी। मेरी अंतर्भावना है जो वह दिन जल्दी आवे जो आप संसार संततिका नाशकर निजरूपमें मग्न होवे। मेरा स्वास्थ्य ठीक पूर्ण हो जावे इस कारण से मेरठ जानेको मेरठ वालोंने जोर दिया अतः मेरठ आगया था।

मेरठ — आ० शु० चिं०
२७–४–५१ — मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई लाला चेतनलालजी योग्य दर्शनविशुद्धि—

धर्म शिक्षासदनका कार्य और शास्त्र सभाका कार्य ये दोनों बातें आप सर्व समाजके लिये बड़े हितकी है। संसारमें जितने भी पदार्थ दृश्य हैं वे सब क्षणिक है, अपनेसे जुदे हैं। सच्ची बात समझकर उपेक्षा भाव बनाये रखना ही कल्याण है। यहतो संसार है। इसमें न कोई किसीका शरण है न कोई किसीका रक्षक है। इसमें रहकर भी भेदविज्ञान पैदाकर अपने ज्ञानस्वरूपमें रम जाना यह ही चतुराई है इस चतुराई का अवसर भी मनुष्य भवमें है। इस अवसरको नहीं चूकने का उद्यम करना उचित है। कोटि शास्त्रोंमें यहही लिखा यह ही सार मिलेगा–जो सब पदार्थोंको भिन्न समझकर रागद्वेषका त्याग करना, परपदार्थके त्यागका उपदेश तो इसलिये है कि रागद्वेष जब होता है परपदार्थका विषय करनेके ही होता है इसलिये रागद्वेषका आश्रय पर पदार्थ होनेसे परपदार्थका त्याग कराया जाता है। वास्तवमें तो रागद्वेष न होने देनेके लिये सर्व प्रयास है—बाह्य पदार्थ हो या न हो उससे लाभ हानि नहीं, लाभ हानि तो मोह रागद्वेषके अभाव और सद्भावसे है। इसीको श्री कुंदकुंद आचार्य ने सिर्फ एक गाथामें सर्व आगमका रहस्य भर दिया है—

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



"रत्तो बंधादि कम्मं मुंचदि जीवो विराग संपत्तो।
एसो जिणोवदेसो तम्हा कम्मेसु या रज्ज।"

समस्त शास्त्रके उपदेशका यही सार है। जो रागी होता है वह कर्म बांधता है। वीतरागी कर्मसे छूट जाता है। श्री आचार्य नमिसागरजी महाराजका समाचार मालूम हो तो लिखना। सोनागिरसे पूज्य वर्णीजीका भी पत्र आ गया है। पूज्य महावर्णी जी इस युगके महान्पुरुष हैं।

अप्रैल' ५१ आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई चेतनलालजी भाई विमलप्रसादजी भाई किशोरीलाल जी भाई जिनेश्वरप्रसादजी आदि मंडली योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आप सब लोग सानंद धर्म साधन करते होंगे। शास्त्र सभा और धर्म शिक्षा सदनका ध्यान रखिये। विशेष ध्यान की बात यह हो जो क्रोध मान माया लोभकी हीनता हो। जैसा जैसा जीवन व्यतीत हो साथ ही साथ कषाय भी मंद होती जावे यही आत्माके कामकी बात है। श्री भाई मूलचन्दजी अपने स्वाध्यायको ज्ञान बढ़ानेके ढङ्गसे करना।

जून' ५१ आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई ला० चेतनलालजी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा। स्वाध्याय व धर्म शिक्षासदन कार्य ठीक चल रहा होगा—भाई मूलचन्द जी सानन्द आप लोगों के बीच बहुत रहते ही होंगे। उनसे स्वाध्याय आदि धर्म कार्योंमें बहुत सहयोग प्राप्त होगा।

इस असार संसारमें जहां कि किसीका किसीसे कुछ तात्विक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



सम्बन्ध नहीं सार और तात्विक आत्मरहस्य पालेना एक न्याययुक्त अपूर्व लूट है अथवा विश्व की विजय है। जब कोई अपना होही नहीं सकता तो कुछ कुछ मानने में ही क्या रक्खा ? श्रद्धा में अपने को निर्मम निर्द्वन्द्व निष्कल सिद्धसम समझें।

सदर मेरठ सबके कल्याण का इच्छुक

मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० चेतनलाल जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच— आप सर्वमण्डली सहित सकुशल धर्मसाधन करते होगे। सकुशलता निर्मोह भाव में है। आत्मा करता भी तो परका कुछ नहीं पर मानने का तो दुःख लगा है। देखो १—परमशुद्ध-निश्चयनय तो द्रव्य के अनादि अनन्त एक स्वभाव को विषय करता है उसकी दृष्टि में तो आत्मा अकर्त्ता ही है। २—शुद्धनिश्चयनय शुद्ध पर्यायवाले द्रव्यको विषय करता है। उसकी दृष्टिमें आत्मा केवल ज्ञानादि स्वाभाविक भावों को करता है जिसमें अनन्त शान्ति स्वयं है। ३—अशुद्धनिश्चयनय—अशुद्धपर्यायवाले द्रव्यको विषय करता है। इसकी दृष्टिमें आत्मा रागादि का कर्त्ता है परका नहीं सो जब परका कर्त्ता नहीं तो पर का लक्ष्य छूटते ही रागादि भी ध्वस्त हो जाते हैं। ४—व्यवहारनय— यह बताता है कि कर्मोदय का निमित्त पाकर आत्मा रागादिमय होता है, परके लक्ष्यके भावमें आत्मारत आदि होता। मतलब ······? स्वभाव से नहीं। तो स्वभाव पर दृष्टि दें पर लक्ष्य छूटा और रागादि दूर हुए। अब एक उपचारनय—कंडमनय—झूठनय ऐसा रह जाता है जिसका विषय झूठ है—अर्थात् मकान आदि मेरे हैं— सो भाई झूठ अभिप्राय छूटे तो आत्मा का कार्य बने। इस आत्मस्वभाव पर लक्ष्य देकर मोह रागद्वेष समाप्त करें। ज्ञानगोष्ठी में सब आते ही होंगे सबको दर्शनविशुद्धि कहना। भाई मूलचन्द जी-धर्मवृद्धि— आत्मसंबोधन

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



का अनुवाद कहां तक होगया। उसकी सब इच्छा करते हैं जो सुनता है।

इन्दौर — आ० शु० चिं०
मई सन् १९५३ — मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान् ला० चेतनलाल जी मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—जयपुर समाज विकट सत्याग्रह आरम्भ करने को होगई अतः यहीं वर्षायोग होगया। द्रव्यदृष्टि करके प्रसन्न रहना—जगतमें अन्य कुछ भी तत्व-सार नहीं है— सर्व पर्यायरूप क्षणिक है मेरा किससे क्या होगा ? आत्मा की सत्य भक्ति करिये इसी में अक्षय लाभ है। सर्व गोष्ठी को दर्शनविशुद्धि।

जयपुर — आ० शु० चिं०
२८—७—५३ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० जुगमन्दरदास जी, सभापति, मन्त्री आदि सदस्य-गण व श्रीयुत भाई बा० वासुदेवप्रसाद जी मन्त्री योग्य धर्मवृद्धि—

आप स्वस्थ्य होंगे—तदनन्तर धर्म शिक्षासदन का कार्य यदि सायं ४५ मिनट ही चलता रहे तब आपके बालकों पर आपकी अनुकम्पा होगी। भवभ्रमण करते हुए सुयोग से जिन्होंने नर जन्म पाया है उन्हें वस्तु स्वरूप का बोध हो जाय तो उस श्रद्धा के हेतु संसार से पार होने व सर्वदुखों से मुक्त होने का प्रयत्न कर लेंगे। जीवन तन, मन, धन, वचन सभी अध्रुव है। शुद्धात्मतत्वके विकास में इनका उपयोग सदुपयोग है। अतः मेरी सम्मतिसे इस पत्रको आप ज्ञान-गोष्ठी में रखकर विशेष विचार करें। ४५ मिनट समय अधिक हो तो ३० मिनट रक्खें (पढ़ाने वाले ३—४ सज्जन चाहियें फिर काम में क्या बाधा) ठीक समय पर शुरु होकर ठीक समयपर समाप्त हो

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



जावे। शेष सब ठीक है। यदि बालकों का पुण्योदय होगा तो आप लोग इसमें निमित्त बनेंगेही सो इसमें मुझे प्रेरक न समझना, मुख्य प्रेरक आपका भाव होगा और निमित्त प्रेरक छात्रोंका पुण्योदय होगा। सर्वमण्डली को धर्मवृद्धि—

१८—१—५४

आ० शु० चिं०
सहजानन्द

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई विमलप्रसाद जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—धर्मसाधन ठीक हो रहा होगा। कौटुम्बिक जालसे निवृत्त पुरुषों को जीविकार्थ परिमिति परिग्रह ही रखकर निरारंभ होकर धर्म ध्यान में विशेष प्रवृत्त होनेको बढ़ना चाहिये।

११—४—५३

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई जी बा० सुमतिप्रसाद जी वकील योग्य धर्मवृद्धि—

परंच—अभी श्रीयुत भाई मूलचन्दके पत्रसे ज्ञात हुआ कि अजितका देहान्त हो गया है। संसारही दुःखका स्थान है। यहां दुःख न हो तो क्या निराकुलता रहे। संसार का स्वरूप जानकर आत्मनिर्मलता से संतोष करें। शोक से सिवाय नवीन कर्मबन्ध के और कोई प्राप्ति नहीं। संसारके जीवोंके ऐसे जन्ममरण अनादि से होते आये हैं। यह जीव अनादि से निम्नज्ञानपद— निगोदमेंरहा, विकास होते होते कीड़े मकोड़े से निकलकर पशुगति को भी पारकर कठिनतासे मनुष्य भव मिलता सो भी मरना पड़ता। मरनेका क्या दुःख करना दुःख तो इस बात का होना योग्य है कि श्रेष्ठ नरजन्म पाकर धार्मिकलाभ पूरा न हो पाय। यह बात हम दूसरों पर ही न घटायें स्वयं पर हम इस बातको सोचें कि हम यदि धार्मिक लाभ न पायें तो जीकर क्या किया। इस विषय में मन लगाया जावे।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



संसारमें जितने आत्मा हैं सब भिन्न भिन्न हैं कोई किसी का नहीं हैं, सम्बन्ध मानना ही भ्रम है। यह भ्रम तभी होता है— जब शरीर से विपरीत लक्षण वाला अखंड चेतन ज्ञान में नहीं आता। यह प्राणी कितना ही परको अपना माने किन्तु अणुमात्र भी उसका नहीं हो सकता। मनुष्य श्रेष्ठमनवाला जीव है इसके लाभकी सफलता स्वयं के पहिचानने और स्थिर होने में है। अतः अब शोक को छोड़कर आप दोनों धर्म-शान्ति के मार्ग व वस्तु स्वरूप के अवबोध स्वाध्याय में अधिकतया लगिये। मुझसे भी जो कुछ हो सकेगा आपकी वैयावृत्य इस विषयक हो सकेगी। आत्मा को एकाकी जानकर निर्मलता बढ़ाये। यह पत्र अजितकी मांजीको भी सुना देना धैर्य से काम लें, बारह भावना का स्मरण करें। आपतो ज्ञान, प्रतिष्ठा, सम्पदा, सर्वप्रियता आदि अनेक बातों से सम्पन्न हैं। बड़े बड़े तीर्थंकरोंको भी एकाकी शान्तिके अर्थ तपस्वी बनना पड़ा। अब कुछ कुछ चिन्तना के एवज, लौकिक कार्यमात्र एक देहली का रखकर शेष समय स्वाध्याय में लगावें।

ईसरी
१२—१—५४

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी "सहजानन्द"

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई बा० महेशचन्द जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र आया—स्वास्थ्य शारीरिक ठीक न जानकर खेद हुआ। अब स्वास्थ्य अच्छा होगा। अपने आपको स्वतन्त्र एकाकी ज्ञानपुञ्ज सबसे निराला परके सम्बन्ध से अत्यन्त पृथक— जैसे कि हैं जानकर प्रसन्न रहना। व्यवहार के काम व्यवहारके हैं, करना तो पड़ता ही है। यदि कार्य अधिक आ पड़ा हो तो सहयोगी विशिष्ट क्लर्क नियुक्त करनेको कलेक्टर आदि जो अधिकारी हों- से कहना या छुट्टियां आपकी चाहियें हो तो ले लेना। आत्मसम्बोधन का कार्य भी बंद रखना या अनुवाद में मनके बहलावे से आराम

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



जचता हो तो भी कम करना। अपने आपके विषयमें यह देखना कि मैं सत् (उत्पाद व्यय ध्रौव्यात्मक) स्वतः सिद्ध, अनादि, अनंत, स्वसहाय, अखण्ड, चेतन पदार्थ हूँ फिर भी बहुप्रदेशी हूं, प्रत्येक प्रदेश अनन्त गुणमय है, प्रत्येक गुणमें अनन्त डिगरियां हैं, इन सबका एक पिण्ड एक रूप अभिन्न मैं आत्मा अपने रूपसे हूँ, परचतुष्टयका लेश भी प्रवेश नहीं। दिनेश परीक्षामें उत्तीर्ण होगया होगा। दिनेशकी माताको धर्मवृद्धि। स्वाध्याय नियमित रखना।

इन्दौर
११-६-५३

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई बा० महेशचन्द्जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच —आपका स्वास्थ्य व धर्म साधन उत्तम होगा। तदनंतर हम लोग इन्दौर समाजके आग्रहसे २५-५-५३ को इन्दौर आ गये हैं। यहां करीब १ माह रहनेका प्रोग्राम है। परिवारको दर्शनविशुद्धि सत्य शांति तो अपने आपके निर्विकल्प अवस्थामें है, देव शास्त्र गुरुके विकल्प भी तत्वतः सहज शांतिके रूप नहीं हैं। उनकी भक्ति अपने स्वरूपमें समाजके लिये है। जगतके प्राणी, मनुष्य प्रायः वैभव संग्रहमें जुट रहे हैं जुटकर कभी मनुष्यभव छोड़कर जायेंगे, सब यहीं पड़ा रहता। जीवन कालमें भी जो प्रसन्न हो जाते वे भी शांति पहुँचानेमें अशक्त हैं। इसलिये सबसे बड़ा काम करनेको यह है कि जगतका अपना यथार्थ स्वरूप जानकर ज्ञानमय निज आत्मामें छुपकर विश्राम करना। इस हितकार्यकी श्रद्धामें हम आप लोग संसार दुःखोंसे अवश्य मुक्त होंगे। दिनेशको आशीर्वाद। ज्ञान गोष्ठीमें तो आप जाते ही होंगे। सर्व मंडलीको धर्मस्नेह कहियेगा। आत्मसम्बोधनका अनुवाद कहां तक हुआ? उसमें भी अधिक परिश्रम नहीं करना। १ घंटा समय काफी है। तथा कुछ विश्राम करते रहना।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



इन्दौर आ० शु० चिं०
२७-५-५३ मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

भैया मूलचन्द—

करना ही क्या शेष है संसारमें जो सार व हितहो—आत्माकी भलाई इसीमें है जो परवस्तु की आशा करेही नहीं तथा परवस्तुका समागम भी कमसे कम रखे—आप १ या २ घंटा समय परोपकार में (जिसमें आपका उपकार स्वयं है) लगाते रहे। सब संयोग क्षणभंगुर है। प्रत्येक आत्मा अपने कषायकी चेष्टा करता हुआ जीवन व्यतीत कर रहा है—परसे उसे न कुछ हानि लाभ हो रहा मगर विकल्पसे अपने सुखकी हत्याकर रहा है।

मनुष्यमें सबसे बड़ा रोग है तो यश प्रतिष्ठा चाहनेका। ज्ञानी पुरुष न तो यश प्रतिष्ठा चाहता न अपयश अप्रतिष्ठामें घबड़ाता—ज्ञानी तो अपने अविकार स्वभावके लक्ष्यसे अपना उन्नयन और स्वरूपसे च्युत होनेमें अवनयन समझता है। जिनके लिये हम अहर्निश चिन्ता करते वे क्या कर देंगे। यदि आपको कुछ मिलनेकी आशा हो तो बतावें। मेरी श्रद्धामें तो कोई परपदार्थ कुछ भी देनेमें समर्थ नहीं है। वाह्य तो वाह्य ही रहता।

शिमला आ० शु० चिं०
५-६-५२ मनोहर

卐 卐 卐

नोटः—यह निम्नलिखित पत्र निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर में हैः—

१—क्या शुक्लध्यानी नियमसे मोक्ष जाता है?

२—क्या नर्कमें किसी समय सुख होता है? होता है तो किस समय?

३—आत्माका स्वभाव ज्ञाता दृष्टा बतलाया है। "ज्ञाता परपदार्थके जाननेवाला और दृष्टा अपनी आत्माको जानने

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



वालेको कहते हैं" क्या यह वाक्य ठीक है? संसारी आत्माओंमें दृष्टापना कैसे बनता है क्योंकि वहां आत्मावलोकन तो है ही नहीं?

४—क्या १३वें गुण स्थानमें मनोयोग भी होता है? होता है तो कैसे? क्या वह मनसे कुछ विचारते हैं।

५—सच्चा देव उसे कहते हैं जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हो। क्या यह सब लक्षण मूककेवली और अन्तकृत केवलीमें पाये जाते हैं। अगर उनमें नहीं हैं तो वह सच्चे देव कैसे कहलाते हैं?

६ - आप्त किसे कहते हैं? क्या सभी अरंहत आप्त हैं?

७—क्या जमीकन्दका त्यागी मूंगफली, हल्दी, अदरख, सूंठ खा सकता है?

८—क्या रात्रिको अन्नका त्यागी तिल, हरी मटर, कुट्टू, चौलाई खा सकता है?

× × ×

श्री भाई मूलचन्द्जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आप सर्व सकुशल होंगे। आपके प्रश्नोंका उत्तर भेज रहे हैं। विवाद ग्रस्त विषयोंका हम मौखिक उत्तर देवेंगे।

१—क्षपक श्रेणी वाला हो तो।

२ - तीर्थंकरके जन्म समय क्षणमात्र दुख कम होता है।

३—ज्ञेय पदार्थोंमें उपयोग है तब तो ज्ञान है और जब उनका ज्ञान नहीं करके सामान्य प्रतिभास है तब दर्शन है ऐसा संसारी आत्मामें घटित होता। जब विशेषका प्रतिभास नहीं तब सामान्य है अब सामान्य प्रतिभासका आधार परपदार्थ तो है नहीं तब आत्माको कहां छोड़ा जाये? अत: सामान्य आत्मा दोनोंको एकार्थ समझना—इसलिये आत्मा का निराभास दर्शन है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



४—द्रव्य मनोयोग होता है, विचारते कुछ नहीं। मनोवर्गणा का आना जाना आदि होता है।

५—देव शुद्धात्माको कहते हैं। सर्वज्ञ वीतराग हितोपदेशीको आप्त कहते हैं।

६—रत्नकरण्ड ५वें श्लोकमें देखिये। हितोपदेशी अरंहत आप्त है मगर शेषको अनाप्त भी नहीं कह सकते।

७—इनमें अदरख व सचित्त हल्दी नहीं खा सकते।

८—तिलकुट्टू चौलाई अन्नमें है। त्यागीकी विधि खाद्य स्वाद्य लेह्य पेयसे है। किसीके रात्रिको खाद्यका त्याग है किसी के चारोंका। अन्नकी चीज खाद्यसे अधिक सम्बन्ध रखती है सो खाद्यका तो नाम भूल गये अन्नका त्याग न वैसे तो अविरत अवस्थामें जघन्य भी नियम यह है कि रात्रिको जल औषधिके अतिरिक्त और कुछ न लेवे। जब नहीं चलती तो लोग ऐसा कर लिया करते हैं। अन्नका त्याग चल उठा। खाद्यमें अन्नके सिवाय और भी चीज हो सकती हैं जो पेट भर दें अधिक खाई जा सकें। हरी मटर सूकने पर अन्न है।

आ० शु० चिं
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीमान भाई मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच—आप सकुशल धर्मसाधन करते होंगे। तदनंतर आप अपना प्राइवेट स्वाध्यायमें अर्थ प्रकाशिका जरूर रखिये। उसमें प्रमेय बहुत है। अर्थ प्रकाशिका तत्वार्थसूत्रका विशद और विस्तृत विवेचन है। मोक्षशास्त्र व चौबीसठाणाको भी कभी देखते रहना चाहिये। ज्ञानमय तो यह आत्मा स्वयं है परन्तु आवरणके कारण उसका विकास नहीं होता सो आवरणके विनाशका बुद्धिपूर्वक

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



यही प्रयास है जो ज्ञानका अर्जन हितबुद्धि रख कर करें। आपसे समाजका कल्याण होगा। अपने सद्‌गृहस्थ बननेका आदर्श रखना इसमें आपको व समाज को लाभ है। आपकी प्रकृति आपके होनहार की सूचक है। इस क्षणिक संसार में इस क्षणिक पर्यायको पाकर अक्षयपद्के लाभका उद्यम करना महान् श्रेयस्कर है।

मेरठ — आपका हितचिन्तक

२७—४—५१ — मनोहर

卐 卐 卐

श्रीमान् भाई मूलचन्द जी योग्यदर्शनविशुद्धि।

परंच— आपका पत्र आया। समाचार जाने। आप एक आसन्न भव्य आत्मा है। आपके गुणसे ही हमें आपमें स्नेह है। आप प्रातः जल्दी यानी सूर्योदय से कम से कम १॥ घंटा पहले उठें। बादमें निबटकर आप स्वाध्याय में १ घंटा लगावें। इस स्वाध्याय में आप अर्थप्रकाशिका रखे चाहे कठिन भली हो। जो समझ में न आवे पत्रद्वारा मुझसे पूछते रहें। सागारधर्मामृत अच्छा ग्रन्थ है। जीवन कैसे शान्तिसुखमय व्यतीत हो यह सब उत्तर सागारधर्मामृतमें मिल जावेगा। जो उसमें लिखा है वह जीवनमें उतारनेकी चीज है।

जीवस्थान चर्चापूर्ण लिखचुका हूं तथा करीब आधी जांच भी चुका हूं। श्री १०५ क्षु० निजानन्द जी यदि अभी ठहरें हों तो उनसे इच्छाकार कहिये।

आप अपनी दिनचर्या का एक प्रोग्राम बनालें और उसके अनुसार विशेष अवसरके अतिरिक्त रोजचर्या करें ऐसा करने से आपका समय व्यर्थ न जायेगा और कार्य निराकुलतापूर्वक होंगे। जैसे हम नीचे लिखते हैं आप उसे सुधार लेना:—

प्रातः ५॥ बजे से ६॥ बजे तक स्वाध्याय
६॥ „ „ ७॥ „ „ स्नान आदि
७॥ „ „ ८॥ „ „ देवदर्शनादि करके दूध पीना

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ८॥ | ,, | ,, | १० | ,, | ,, | दुकान |
| १० | ,, | ,, | ११॥ | ,, | ,, | भोजन विश्राम |
| ११॥ | ,, | ,, | ४ | ,, | ,, | दुकान |
| ४ | ,, | ,, | ५ | ,, | ,, | शुद्धि भोजन |
| ५ | ,, | ,, | ७ | ,, | ,, | विश्राम व अन्य कार्य धर्म शिक्षा सदन |
| ७ | ,, | ,, | ७॥ | ,, | ,, | सामायिक आदि |
| ७॥ | ,, | ,, | ८॥ | ,, | ,, | शास्त्रसभा |
| ८॥ | ,, | ,, | ६ | ,, | ,, | तत्व चर्चा |
| ६ | ,, | ,, | ५। | ,, | ,, | शयन |
| ५। | ,, | ,, | ५॥ | ,, | ,, | जागरण कायोत्सर्ग |

जीवस्थान चर्चाके पूर्ण होनेके बाद आत्मभावना लिखूंगा ऐसा विचार है। यहां श्री बड़े महाराज जी १५ जनवरी तक ठहरेंगे आप आसकें तो अच्छा अवसर है। श्री ला० मित्रसैन, नाहरसिंह जी से दर्शनविशुद्धि। दोनों भव्यपुरुष हैं। श्री भाई चेतनलाल जी— भाई किशोरीलाल जी आदि बंधुओंसे दर्शनविशुद्धि कहिये— ला० किशोरीलाल जी आसकें तो अच्छा अवसर है।

इटावा

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भैया मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि।

परंच। आपका व सेठ ला० मित्रसैन नाहरसिंहजीका धर्मध्यान ठीक प्रकारेण चल रहा होगा। अपने अभिप्राय को निर्मल निर्मोह बना लेने के समान उत्तम कुछ अन्य जगत में है ही नहीं। दृश्यमान तो क्षणभंगुर है। धनकी तो उचित व्यवस्था उद्यम करते हुये भी आत्मस्वरूपकी ओर विभोर रहनेमें शान्ति है। श्री बा० सुमतिप्रसाद

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



जी से दर्शनविशुद्धि कहना। श्री भाई किशोरीलाल जी व छुट्टनलाल जी से दर्शनविशुद्धि। सर्वमण्डली को दर्शनविशुद्धि कहिये।

इन्दौर
२८–७–५२

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्री भाई मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

भाई जी आपके पास पत्र भेजा क्या पहुँचा नहीं ? अपने जीवन का ध्येय एक यही प्रधान रखना कि सर्व विकल्पों से मुक्त होकर ज्ञाता दृष्टाकी स्थिति बनानी है। श्री भाई चेतनलाल जी बा० महेशचन्द जी आदि सर्वमंडली को दर्शनविशुद्धि।

ईसरी
२–१–५४

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच आपका पत्र आया वृत्त जाने।

जैन समाज मुजफ्फरनगर द्वारा हो रहे वीर जयन्त्युत्सवमें जैन कुमारसभा द्वारा जो पञ्चकल्याणकका चित्र दृश्य दिखाये जानेका कार्यक्रम है वह अच्छा एवं स्फूर्तिदायक है। इससे इतिहासके नायकोंकी विशुद्धि, धार्मिकताके लक्ष्यसे अपनी निर्मलताको प्रोत्साहन प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त स्वाध्याय व सत्समागम बढ़ानेके लिये भी एक हमारा सुझाव है जैनसभा इसी प्रकार अपने धार्मिक प्रोग्राम, विचार तथा आचारसे वृद्धिगत हो।

आपके भेजे हुए कुछ प्रश्नों के उत्तर मौखिक हो ही गये थे। फिर ...... अच्छा ...... प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार हैं।

(अ) मनुष्यायुके अभाव और देवायुके प्रथमोदयका समय एक ही है तब देवपर्याय का उत्पाद और मनुष्यपर्याय का व्यय व जीववस्तु का ध्रौव्य इस तरह उत्पादव्ययध्रौव्य सिद्ध है।

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



(आ) आरम्भत्याग प्रतिमासे ऊपर वाला अपने कपड़े प्रासुक जलसे साधारणतया धो सकता है तथा अन्यपुरुष साधारणतया या विशेषतया धोना चाहे तो धो सकता है।

(इ) सिद्धभगवान ने जो पहिले जाना वही अगले समयमें जानते हैं तो भी पहले समयकी जाननक्रिया अन्य है दूसरे समयकी जाननक्रिया अन्य है। परिणमन (वर्त्तना) न हो तो जानने का कार्य समाप्त हो जायेगा फिर अगले समय में जड़ हो जायेगा।

(ई) अब तक ऐसा समझा गया है कि चैतन्यभाव करि तो अभव्यमें भी सिद्ध होने की शक्ति है परन्तु व्यक्त होने की योग्यता नहीं चाहे कारण भी मिल जावें। दूरानदूरभव्य में सिद्ध होने की व्यक्त होने की शक्ति है परन्तु कारण मिलते ही नहीं।

(उ) छटे गुणस्थान में १—इष्टावियोगज, २—अनिष्टसंयोगज ३—वेदनाप्रभवयें तीन आर्त्तध्यान हो सक्ते हैं।

(ऊ) जीव पुद्गलका गमन हो या हलनचलन हो सबमें धर्म द्रव्य निमित्तमात्र है।

आप सब ज्ञानगोष्ठी के सदस्यों का प्रवचन कार्य ठीक चलरहा होगा। यहां धर्मशिक्षासदन बिना अन्तरकाल के चला जा रहा है। सर्वमण्डली को दर्शनविशुद्धि।

देहरादून — आ० शु० चिं०
२४-३-५३ — मनोहर

卐 卐 卐

नोटः—यह निम्नलिखित पत्र निम्नलिखित प्रश्नोंके उत्तरमें हैः—

(१) षट गुणी हानिवृद्धि किसे कहते हैं ?

(२) एक बार सम्यक्त्व होनेके बाद दोबारा कितने समय तक सम्यक्त नहीं हो सकता ?

(३) १४ लाख योनियां कौन कौन होती हैं ?

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



श्रीयुत भाई मूलचन्दजी योग्य दर्शनविशुद्धि—

१—षटगुणी हानि वृद्धि अनुमान व आगमसे गम्य है। अतिन्द्रिय प्रत्यक्ष ज्ञानियोंके प्रत्यक्षगम्य है।

अनंतभागवृद्धि असंख्यातभागवृद्धि संख्यातभागवृद्धि असंख्यात-गुणवृद्धि अनंतगुणवृद्धि में तो वृद्धि स्थान है और अनंतभाग हानि असंख्यातभागहानि संख्यातभागहानि संख्यातगुणहानि असंख्यात-गुणहानि अनंतगुणहानियें हानि स्थान हैं। पदार्थ प्रतिसमय परिणमन करता ही रहता है। परिणमन दृष्टिकी अपेक्षा हानिवृद्धि रूप है अथवा परिणमन उत्पादव्ययस्वरूप है। जो व्ययांश है वह हानिरूप है जो उत्पादांश है वह वृद्धिरूप है। जो उत्पाद होता वह थोड़े से हो होकर अनन्तगुणवृद्धि रूप होता है। जो व्यय होता वह भी थोड़े से हो होकर अनंतगुण हानि होता। परिणमन प्रक्रिया अतिसूक्ष्म है। उसमें ये हानिवृद्धि गर्भित हो जाती है। अथवा जैसे विल्लोरी काचमें न कुछ आता न कुछ जाता न कम होता न बढ़ होता तथापि उसकी कांति एक ओरसे हानि व एक ओर वृद्धिरूप होता है। अथवा आत्माके अनन्तगुणों में एक गुण (जैसे सत्ता) के परिणमन की वर्त्तना सो अनंत भागवृद्धि, असंख्यात गुणों को देखकर उसमें एक गुणकी परिणमनवृद्धि सो असंख्यात-भागवृद्धि, संख्यात गुणोंमें (जैसे सिद्धके गुण) एक गुणका जो परिणमना सो संख्यातभागवृद्धि। संख्यातगुणोंका परिणमनरूप वृद्धि सो संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातों गुणों का परिणमन सो असंख्यातगुणवृद्धि अनंतगुणोंका परिणमना सो अनंतगुणवृद्धि। उनका परिणमन होकर द्रव्य में अन्तर्लीन होना सो क्रमशः उतनी हानि अथवा परिणमन तो होता ही है वह हानि वृद्धिरूप स्वभावतः है अन्यथा परिणमन कैसे? समझ में न आवे तो न सही, वही सूक्ष्मतया षटस्थान पतित है।

२— एक बार प्रथमोपशमसम्यक्त्व होनेके बाद पल्यके

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



असंख्यातवें भाग काल तक नहीं होता यह काल असंख्यात-वर्षरूप है।

३—योनियां ६ हैं और उनके अविभागप्रतिच्छेदरूप की तरह अनेक भेद हो जाते हैं। जैसे शीत, कोई कमशीत, कोई अधिक शीत, कोई उससे अधिक शीत आदि इस तरह ९ में भेद अंश हो जाते हैं जिससे मनुष्य के भी १४ लाख योनि होती हैं मंडली को दर्शनविशुद्धि—

देहरादून

आ० शु० चिं०
मनोहर

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई मूलचन्द जी—योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच—आपका पत्र जो मेरठ पहुँचा था वह इन्दौर मिलगया। आप सब सकुशल होंगे। आपने जो प्रश्न पहिले भेजे थे वे मिल नहीं रहे आप दुबारा लिखकर भेज देवे। वस्तु स्वरूप कितनी ही दृष्टियां रखकर विचार किया जाता है तब ही वस्तु का पूर्ण निर्णय होता है। १—दो द्रव्यों के बंधपर्याय की दृष्टि से। २—स्वपर—कारणक एक द्रव्य में हुई, पर्याय की दृष्टि से। ३—स्वप्रत्ययक एक द्रव्य में हुई पर्याय की दृष्टि से। पहिले का विषय यह सब स्थावर जंगम प्राणिसमूह है। दूसरे का विषय रागादिभाव है। तीसरे का विषय शुद्धपर्याय है। ज्ञान गोष्ठी का कार्य ठीक चल रहा होगा। श्री भाई चेतनलाल जी आदि मंडली को दर्शनविशुद्धि कहिये। बा० महेशचन्द जी सकुशल होंगे। हमारा विचार ५-६ दिन में ही यहां से चलने का है। वर्षायोग का जहां निर्णय होगा उस स्थान पर पहुंचकर या पहले आपको सूचना दूंगा।

इन्दोर
३०—६—५३

आ० शु० चिं०
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



श्रीयुत भाई मूलचन्द जी योग्य दर्शनविशुद्धि—

परंच - आप सब गोष्ठीसहित सप्रसन्न धर्मसाधन करते ही होंगे— तदनन्तर आपने प्रवचन के सारांशों को लिखने के लिये कहा सो किसी प्रकार आपके पास पहुँचेंगे। भेदविज्ञान वस्तुस्वरूप की चर्चा करके सामायिक में इन बातों पर विचार करना चाहिये। आत्मतत्व की दृष्टि पानेसे बढ़कर और कुछ वैभव नहीं है। संसार के अनित्य पदार्थों की अटकी हो तो आवे— आप सबकी अटक नहीं रहना चाहिये— भाई ला० चेतनलाल जी, किशोरीलाल जी आदि सर्वबंधुओं को दर्शनविशुद्धि— ब्र० क्षमानन्द जी सकुशल होंगे धर्मवृद्धि कहना।

जयपुर<br>
८—८—४३

आ० शु० चिं०<br>
मनोहरवर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई मूलचन्द जी— योग्य धर्मवृद्धि—

परंच - आप सकुशल होंगे—आपका पुराना पत्र भी मिलगया और ताजापत्र आज मिला। शंकाओंके समाधान निम्नप्रकार हैं—

१—साधारणतया अर्थात् शब्दों में विकल्पों में भेदविज्ञान मिथ्या-दृष्टि के भी हो जावे परन्तु यदि श्रद्धा में आता हुआ भेदविज्ञान हो जो वस्तु के अभेदस्वरूप में पहुँचने का पूर्ववर्ती हो पाता तो मिथ्या दृष्टि नहीं रह सकता। जो चार लब्धियां अभव्यके भी हो जाती हैं वहां परिणामों में उज्जवलता तो है ही भेद विज्ञान भी उनके होता फिर वह सम्यग्दर्शन के बिना सम्यग्ज्ञानरूप नहीं है। साधारणतया भेदविज्ञान हो जाय और सम्यक्त्व न भी हो परन्तु तत्वतः भेद विज्ञान सम्यक्त्व के बिना नहीं होता। भेदविज्ञान, ज्ञान का कार्य है सम्यक्त्व श्रद्धागुण का कार्य है।

२—उपादान और निमित्त का साधारणतया यह भाव है— जिसमें कार्य होता वह उपादान है और अन्य अन्वयव्यतिरेक

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



सम्बन्ध रखनेवाले (जिनके होने पर हो, न होने पर न हो) निमित्त हैं। निमित्त के अभाव में स्वाभाविक कार्य होता वहां भी कालद्रव्य उदासीन निमित्त है।

३—शूद्र के विषय में पुराने अनुभवी महापुरुष और भी स्पष्टयया बता सकते हैं।

४—पेड़ से गिरे हुए पत्ते में जीव वह समूचे वृक्षवाला एक नहीं रहता है यदि असमय में वह पत्ता गिरे तब अन्य प्रत्येक स्थावर हैं। कुए से जल निकलने पर जल में एकेन्द्रिय स्थावर रहते हैं।

कोडरमा                                                                 आ० शु० चिं०

१८—१—५४                                                                 सहजानन्द

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई ला० मूलचन्द जी योग्य धर्मवृद्धि—

परंच—आपका पत्र आया था। चैतन्यस्वरूप ! तुम वही चेतन तो हो जैसा सिद्ध है। एक परलक्ष्य ने ही मात्र सारी अवस्था बिगाड़ दी है। अवस्था बिगड़ने पर भी स्वभाव वही है, परलक्ष्य हटते ही स्वभावदृष्टि हो जाती है। स्वभावदृष्टि करते ही परलक्ष्य हटजाता है। देखो भैया धर्मका उपाय कितना सरल है। कितनी ही परिस्थिति आवो, वाह्यपदार्थ की स्वप्नमें भी इच्छा न करना। होता क्या है वाह्यसमागमसे मात्र आपत्ति (विभाव) का निमित्त। अपना शुद्ध लक्ष्य बनाकर पक्का दृढ़ विश्वास करना। जगत में अनन्तभव पाये हैं यह भव कुछ अनोखा नहीं है। हां यदि वाह्य की दृष्टि दूर कर निजका कल्याण कर लिया जावे तो अनोखे कार्य का प्रारम्भ होने से यह अनोखा भी है। एक बार सत्यविचार करके भीतर से हां कहदो कि मुझे आत्मस्वभाव की स्थिरता के यत्न के लिये ही वर्तमान का उपयोग करना है। इस कार्य के बिना ही तो घूमे। लोकोंकी जानकारीसे अपने को क्या मिलेगा और जड़ समागमसे अपने को क्या मिलेगा और खूब सोच लो। गृहस्थीमें

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



रह रहे तो व्यापार के लिये नियत समय रखना ६ घंटा काफी है फिर जैसा समझो प्रातः १॥ घंटा या १ घंटा निजी स्वाध्याय में अवश्य लगाना शेष धर्मध्यान जैसा करते हो करते रहना। श्री ला० चेतनलाल जी आदि सर्व से धर्मसे धर्मवृद्धि कहना—

रफीगंज — आ० शु० चिं०

१–३–५४ — सहजानन्द

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई मूलचन्द जी योग्य धर्मवृद्धि।

परंच – हमारा पत्र जो आपकी शंकाओं के कुछ उत्तररूप था पहुँचा होगा— ज्ञान गोष्ठी में १५–२० मिनट को एक कठिन ग्रन्थ आध्यात्मिक रख लेना; कठिन ही कई बार पढ़ने पर सरल होजाता है। अध्यात्मचर्चा छप गई है उसे ज्ञानगोष्ठी में स्वाध्यायार्थ रखना। जीवस्थानचर्चा छप गया है उसेभी आप एक बार तो जरूर देख लेना समस्थानसूत्र विषय दर्पण छप गया है उसे रखकर भेदों के विचार को करना। अस्तु

भाई मूलचन्द जी तुम दुकान आदि काम मर्यादित समय रख कर करना ऐसा प्रोग्राम बनाना जिससे तुम्हें कम से कम ३ घंटा समय स्वाध्याय के लिये मिल सके वह इस प्रकार हो सकता है— जैसे १ घंटा सूर्योदय से १॥ घंटा पूर्व उठकर १ घंटा। प्रातः ३० मिनट शास्त्रसभा में। रात को १॥ घंटा इसमें चाहो तो आधा घंटा बच्चों को धर्मशिक्षा भी दे सकते हो। श्री भाई ला० चेतनलाल जी आदि बंधुओं को यथायोग्य कहना। संसार संतति के छेद का उपाय कर लेना मनुष्यभव पाने का अमूल्य लाभ है। परकी रुचि अपनी हत्या है।

हजारीबाग — आ० शु० चिं०

३०–१–५४ — सहजानन्द

卐 卐 卐

Report any errors at vikasnd@gmail.com

http://www.jainkosh.org



श्रीयुत बा० आनन्द प्रकाश जी जैन।

योग्य धर्मवृद्धि।

परंच—आपका स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा। आपका बहुत दिनों से कुशल पत्र नहीं आया सो देना। स्वाध्याय में प्रवत्ति रखने का ख्याल न भूलिये आजकल ५ बजे से ६ बजे तक प्रातः काल का समय सामायिक स्वाध्याय के लिये रखिये। हाथ पैर धोकर सामायिक स्वाध्याय कर सकते हैं। स्नान पश्चात् कर सकते हैं। किसी दिन अशुचि हो जावे तब कपड़ा बदल कर कर सकते हैं। स्वाध्याय में प्रमाद न करना। आत्मा का स्वभाव ज्ञान है उसके विकास का यत्न रखना। परिवार को धर्मवृद्धि। बच्चों को आशीर्वाद।

६–८–५४

आ० शु० चिं०
मनोहर लाल वर्णी

卐 卐 卐

श्रीयुत भाई जी महावीर प्रसाद जी योग्य धर्मवृद्धि।

आपका पत्र आया-स्वास्थ्य व धर्मसाधन ठीक चल रहा होगा। हमारा स्वास्थ्य ठीक है। आपका स्वाध्याय सामायिक ठीक चलरहा होगा। ज्यों ज्यों दिन व्यतीत होते जाते मनुष्य की आयु भी घटती जाती है। संसार के किसी पदार्थ में आत्मा का सुख नहीं है। यह सारा समागम धोखा है अपने आत्मा की खबर लेना सबसे उत्तम काम है। सो सामायिक स्वाध्याय व छहढाला की ढालें पढ़ना व आत्मा कीर्तन का मनन करना इतनी बात कभी नहीं छोड़ना चाहें बाहर जावें तो वहां भी करना चाहे कम करसको

Version 1

http://sahjanandvarnishastra.org/



कुछ परवाह नहीं। किसी भी प्रसंग पर कोई चिन्ता नहीं करना, आत्मा तो भगवान् के स्वभाव समान हैं वाह्य पदार्थों के आश्रय क्या चिन्ता करना। सब समाचार देना। घरमें की तबियत आदि का हाल भी लिखना वह बहुत भद्र प्रकृति की है। आप दोनोंसे सम्यग्ज्ञान की वृद्धि हो और सत्यसुख का मार्ग पावें। श्री भाई सुमतिप्रसाद जी दालमंडीवाले को धर्मवृद्धि कहना। श्री पं बिहारीलाल जी को धर्मवृद्धि कहना।

आ० शु० चिं०
मनोहरलाल वर्णी

卐 卐 卐

वी० के० रस्तौगी के प्रबन्ध से ऑब प्रेस, मेरठ में मुद्रित।

Report any errors at vikasnd@gmail.com